मेरा राजस्थान

वर्ष-१९, अंक- ०३, मुम्बई, मई २०२४ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ३६ मूल्य -१००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

भारत के लाल महाराणा प्रताप
की जन्म जयंती ९ मई पर
हार्दिक शुभकामनाएं

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

Remove India Name From the Constitution India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in

भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान

MOIRA®
THERMEX® TMT BARS

The Backbone of Your Structure

MOIRA means
Double strength for your Construction

Available In : Fe 550, Fe 550D, Fe 600 & CRS

JAIDEEP METALLICS
& Alloys Pvt. Ltd.

106 / 107 / 108, 1st Floor, Neha Ind. Estate, Behind CCI Ltd., Off Dattapada Road, Borivali (E),
Mumbai - 400 066. Phone : +91 2242032000 Fax : +91 22 42032020
Email : ajay@moiratmt.com | marketing@moirantmt.com

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

१५ वर्षों से लगातार प्रयास जारी

विश्वस्तरीय 'मैं भारत हूँ' पत्रिका के द्वारा

भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई से भारत की राजधानी दिल्ली, प. बंगाल की राजधानी कोलकाता

राष्ट्रीय अध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
मो. 9322307908

सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में रथ यात्रा

तमिलनाडु की राजधानी 'चैन्नई', राजस्थान की राजधानी 'जयपुर',
मध्यप्रदेश की राजधानी 'इंदौर', छत्तीसगढ की राजधानी 'रायपुर',
असम की राजधानी 'गुवाहाटी', झारखंड की राजधानी 'रांची' से होते हुए

अब

बिहार की राजधानी 'पटना', उत्तर प्रदेश की राजधानी 'लखनऊ',
उत्तराखंड की राजधानी 'देहरादून', हरियाणा की राजधानी 'चंडीगढ',
हिमाचल प्रदेश की राजधानी 'शिमला' का
हर लाडला भारत माँ का कहेगा
''जय भारत''

राष्ट्रीय अध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
मो. 9322307908

आव्हानकर्ता

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

राष्ट्रीय अध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
मो. 9322307908

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9830224300

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका
मो. 01(919)610-7106

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
किशोर जैन, लंदन, यूके
मो. 044 (770) 3827595

भारत को INDIA की गुलामी से छुटकारा मिले
दो नाम नहीं चाहिए, एक ही नाम केवल भारत
भारत को केवल भारत ही बोला जाए INDIA नहीं की सफलता के लिए

संपर्क करें:- मो. ९३२२३०७९०८

५ निराली है राजस्थान की साज संस्कृति...

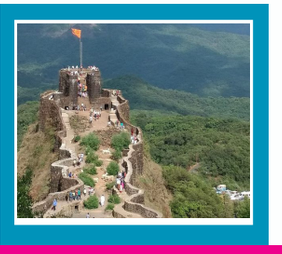

१० महाराष्ट्र राज्य की स्थापना...

१२ राजस्थान का सपूत महाराणा प्रताप...

१५ राजस्थानी संस्कृति का महानतम पर्व ...

२३ भगवान परशुराम...

मई २०२४ के अंक की झलकियाँ

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' जून २०२४ री विशेषतावां

१५ जून

महेश नवमी

संकलित चित्र

निराली है राजस्थान की साज़ संस्कृति, बलिदान के साथ आतिथ्य खानपान

'म्हारो रंग रंगीलो राजस्थान' इन पक्तियों को सुनते ही राजस्थान की सतरंगी संस्कृति की तस्वीर हमारे मस्तिष्क में उभर जाती है। हर भारतीय संस्कृति की अपनी पहचान बनी हुयी है जिसमें समाहित होता है पूरा परिवेश, आदर्श परम्परा एवम् लोक भाव। राजस्थान की संस्कृति अपने आप में अनोखी है जो दुनिया भर में अपनी विशेषताओं के लिए पहचानी जाती है। यहाँ का रहन-सहन, वेशभूषा, स्वादिष्ट भोजन, अतिथि सत्कार, मेले, नृत्य-संगीत आदि सभी अपने आप में बेमिसाल हैं। राजस्थान का व्यक्ति चाहे स्वदेश में रहे या विदेश में, वह अपनी राजस्थानी संस्कृति को कभी नहीं भूलता, खान-पान, शादी-विवाह में राजस्थानी वेशभूषा व रीति-रिवाजों को ही अपनाता है।

शक्ति और भक्ति की महान संस्कृति

शौर्य और बलिदान की भूमि भक्तों और संतों का प्रदेश है राजस्थान। जहाँ महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज चौहान, अमरसिंह राठौड़, राणा सांगा जैसे शूरवीर पैदा हुए हैं, वहीं अनेक सूफी संत, दादू, पीपा, चरणदास, भक्तिमति मीरा भी अवतरित हुए हैं।

राजस्थान की रत्नगर्भा भूमि ने जिन वीरों को पैदा किया है यदि उनके नामों की माला पिरोकर भारत माँ के गले में पहना दी जाए तो 'भारत' का सिर गर्व से ऊँचा हो जाए। यहाँ के वीरों ने चीन व पाकिस्तान के सैनिकों को नाकों चने चबा दिये थे। यहाँ की वीरांगणाओं की जौहर की ज्वाला में अपने आपको समर्पित करना, इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

अतिथि सत्कार की अद्वितीय परम्परा

भारतीय संस्कृति में 'अतिथि देवो भव:' माना गया है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण राजस्थान के प्रत्येक परिवार में देखने को मिलता है, जब यहाँ के ढाणी, गाँव या नगर में बस रहे लोगों के यहाँ जाने का अवसर मिलता है तो राजस्थानी परम्परा के अनुसार अतिथि को आदर सहित बैठक में बैठाया जाता है तथा पीने के लिए शुद्ध पानी या छाछ का गिलास पेश किया जाता है तथा घर आए मेहमान की पूरी तरह आवभगत की जाती है। भोजन के समय भोजन और नाश्ते के लिए आग्रह किया जाता है जो राजस्थानी संस्कृति का परिचायक है। यहाँ का भोजन भी अपने ढंग का निराला ही होता है। यहाँ के मुख्य भोजन में बाजरे की रोटी, मक्खन, दही, छाछ, राबड़ी, दाल-बाटी, चूरमा एवम् बाजरे का खीचड़ा आदि रहता है। राजस्थान की मिठाइयाँ व नमकीन न केवल प्रदेश में अपितु पूरे विश्व में मशहूर है, जैसे कि बीकानेर के रसगुल्ले व नमकीन (भुजिया) जयपुर के घेवर, सांभर की फीणी, ब्यावर के तिल पापड़, अजमेर का सोहन हलवा, किशनगढ़ की बालूशाही, अलवर का मावा (मिल्क केक) इतने स्वादिष्ट होते हैं कि इन्हें बार-बार खाने की अभिलाषा मन में बनी रहती है।

वर्ष-१९, अंक ३, मई २०२४

१२ अंक वार्षिक १२००/-

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसम्पादक - संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक

स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...

सम्पादकीय कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व,
मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - ४०० ०५९.
दूरध्वनि - ०२२-२८५० ९९९९

भ्रमणध्वनिः 9322307908

अणुडाकः **mailgaylordgroup@gmail.com**
बिजयजैन@मैंभारतहूँ.भारत
अन्तरताना : **http//: www.merarajasthan.co.in**
http//:www.bijayjain.com

https://www.facebook.com/merarajasthanpatrika/
https://twitter.com/mera_rajasthan
https://www.instagram.com/merarajasthan01/

कृपया विज्ञापन बिल, सदस्यता शुल्क के साथ सहयोग राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908 UPI No.

सम्पादकीय ....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं अभियान की सफलता के लिए आयोजित 'आपणों राजस्थान' की सफलता आज भी गुंजायमान हो रही है

भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई की 'फिल्म सिटी' में आयोजित (३० मार्च) राजस्थान स्थापना दिवस के पर्व पर ३० व ३१ मार्च २०२४ को 'आपणों राजस्थान' भव्यातीभव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी सराहना मुंबई के साथ देश-विदेश में फैले भारतीय राजस्थानी परिवारों के द्वारा आज भी की जा रही है।

कहते हैं कि कुछ कार्यक्रम ऐसे आयोजित हो जाते हैं, जिसका संस्मरण लोगों के बीच महीनों, नहीं सालों तक बना रहता है। 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम को हुए एक महीने बीत रहे हैं, आज भी 'आपणों राजस्थान' जो की सन २०१४ में पहली बार मुंबई में आयोजित भव्यातिभव्य कार्यक्रम के रूप में हुआ था,उसकी यादगार राजस्थानी परिवारों में आज भी बनी हुई है, इस वर्ष आयोजित ७वां वार्षिक कार्यक्रम हुआ, जिसमें भारत के कोने-कोने से ही नहीं विदेश से भी लोग पधारे थे।

'मैं भारत हूं फाउंडेशन' जो की भारत सरकार से पंजीकृत अंतर्राष्ट्रीय संस्थान है, जिसका एकमात्र उद्देश्य यह है कि अब तो अपने देश का नाम केवल एक ही रहे केवल 'भारत', जिसमें आंशिक सफलता भी मिल रही है, भारत का हर ७वां भारतीय अपने देश के नाम का उद्घोष 'भारत' नाम से ही करने लगा है। मुझे विश्वास भी है कि हमारे भारत मां की लाडले 'सांसद' भारत की सर्वोत्तम संस्था लोकसभा व राज्यसभा में संवाद कर 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद क्रमांक १ एक से INDIA' को विलुप्त करवाएंगे और विश्व के मानचित्र में INDIA की जगह हमारे देश का नाम BHARAT लिखवाएंगे और यह २०२४ के नवंबर-दिसंबर तक हो जाएगा, क्योंकि भारत के वर्तमान पंतप्रधान नरेंद्र मोदी जी 'भारत माता की जय' ही बोलते हैं, इसलिए हम भारतीय अपने देश को केवल 'भारत' ही बोलेंगे, 'जय भारत' ही बोलेंगे।

'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम के विशाल मंच पर भी 'भारत' नाम की ही गूंज रही, हर किसी ने कहा कि अब से हम हमारे देश को केवल 'भारत' ही बोलेंगे और हर दूसरे को भी प्रोत्साहित करेंगे, ताकि विश्व के मानचित्र में जहां अपने देश का नाम केवल INDIA लिखा हुआ है वहां पर BHARAT लिखा जाए और यह हम १४० करोड़ भारतीयों के निवेदन भी हैं, उस पर भारत सरकार जरूर ध्यान देगी।

जय जय राजस्थान!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए का
आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

भारत को भारत ही बोलें INDIA नहीं, जय भारत!

आपणों राजस्थान का अभूतपूर्व धमाल
मैं भारत हूँ फाउंडेशन ने किया कमाल

मुंबई: 'राजस्थान स्थापना दिवस' पर्व के अवसर पर ३० और ३१ मार्च २०२४ को 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा मुंबई की फिल्म सिटी में रचा गया इतिहास, किया अनूठा प्रयास, अध्यक्ष बिजय कुमार जैन मुंबई, महामंत्री शोभा सादानी कोलकाता, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ गोविंद माहेश्वरी कोटा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा कोलकाता, अंतर्राष्ट्रीय संयोजक अमेरिका निवासी अरूण मूंधड़ा, श्रीमती विजया पोफले मुंबई व अन्य पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में प्रसिद्ध उद्योगपतियों की उपस्थिति में 'राजस्थान कोहिनूर' मोमेन्टो (एक यादगार) प्रदान किया गया, अनगिनत फिल्मी शख्शियत और प्रसिद्ध राजस्थानी भारतीयों को ट्रॉफी और राजस्थानी पाग (पगड़ी) पहनाकर सम्मान किया गया। उद्योगपतियों में उपस्थित श्री रामेश्वर लालजी काबरा मुंबई, श्री कमल जी गांधी कोलकाता, श्रीमती सुमन जी कोठारी मुंबई, श्री राजकुमार जी काल्या गुलाबपुरा राजस्थान, श्री गिरधर जी मूंधड़ा सूरत, श्री रामरतन जी भूतड़ा सूरत, श्री मधुसूदन जी महेश्वरी मुंबई, डॉ. विनय जैन मुंबई, श्री एवं श्रीमती आर.वी. बूबना, श्री प्रदीप जी राठौड़, श्री ग्वालदास करनानी, श्रीमती श्रद्धा जी गट्टानी आदि सनामधन्य व्यक्तित्व ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति के साथ सहयोग दिया। श्री जितेंद्र बियानी खामगॉ व द्वारा निर्मित स्वास्थवर्धक ओरगेनिक प्रोडक्ट उपहार में दिया गया। राजस्थान कोहिनूर प्राप्त प्रतिभाओं के नाम हैं प्रसिद्ध समाज सेवी श्रीमती रतनी देवी काबरा, प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक के.सी. बोकाडिया, प्रसिद्ध भजन गायक अनूप जलोटा, प्रसिद्ध संगीत निर्देशक दिलिप सेन (समीर सेन), प्रसिद्ध गायक निर्देशक राम शंकर, राजस्थानी सिने अभिनेता अरविंद कुमार, मोटिवेशनल स्पीकर श्रीमती कल्पना गगरानी, राष्ट्रीय अध्यक्ष तेरापंथ महिला श्रीमती सरिता डागा, मिस यूनिवर्स श्रीमती रूपल मोहता, मिसेस इंटरनेशनल श्रीमती सिद्धि जोहरी, बेस्ट ब्लॉगर श्रीमती श्रद्धा गट्टानी, लिरिकिस्ट अनिता सोनी, राइटर शकुंतला करनानी, आउटडोर विज्ञापन एडवाइजर फेम पायल पटेल, सुप्रसिद्ध फिल्मी कथाकार व निर्माता निर्देशक मनोज तापड़िया, प्रसिद्ध सिंगर्स रेखा राव और अर्चना जैन, ड्रामा निर्देशक साधना मदावत, समाज सेवी सुशीला जी दरक आदि-आदि कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहे। मूमल राजस्थान री और ढोला मारवान, जिसमें ३५ एंट्री से १५ को मंच पर स्थान मिला। श्रीमती रूपल मोहता, श्रीमती सिद्धि जोहरी एवं श्रीमती श्रद्धा गट्टानी ने निर्णायक भूमिका निभाते हुए उन्हें ग्रूमिंग शिक्षित किया, इस हेतु 'मूमल राजस्थान' प्रतियोगिता अनूठे आयामों से प्रस्तुत होकर बहुत ही उच्चमापदंड का हुआ, जिसका निर्देशन राज भाई नृत्य निर्देशक ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संयोजक अनुपमा शर्मा (दाधीच) के साथ सन्नी मंडावरा, रवि जैन, श्रीमती विमला जी समदानी, श्रीमती विजया जी फोफलिया, श्रीमती युक्ता सोढ़ानी, श्रीमती सुनीता सारड़ा, श्रीमती पद्मा जी तोतला ने अथक परिश्रम किया। बॉलिवुड पार्क के कार्यकर्ता सर्वश्री वैभव, प्रथमेश, अरविंद सुमित शितल का भी विशेष सहयोग रहा। प्रसिद्ध गीतकार राम शंकर जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जल्द ही 'भारत नाम सम्मान' का एक गीत 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन को उपहार में दूंगा।

जय-जय राजस्थान! जय भारत!

यो है आपणों राजस्थान

मुंबई माय राजस्थान स्थापना दिवस ३०-३१ मार्च २०२४ को हुआ भव्य राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में आयोजित ३०-३१ मार्च को गोरेगांव फिल्म सिटी में आयोजित भव्य कार्यक्रम में 'मूमल' प्रतियोगिता के रहे विजेता

प्रथम विजेता
सुश्री राधिका मुंदड़ा

द्वितीय विजेता
श्रीमती सोनम धूत

तृतीय विजेता
डॉ पूनम बियानी

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में आयोजित ३०-३१ मार्च गोरेगांव फिल्म सिटी में आयोजित भव्य कार्यक्रम में 'ढोला मारू' प्रतियोगिता के विजेता

प्रथम विजेता
श्री व श्रीमती दिशा सचित अग्रवाल

द्वितीय विजेता
श्री व श्रीमती शैलजा गिरधर बागड़ी

शुभ 卐 लाभ

KOTHARI®
CELEBRATING COMFORT 100 YEARS KOTHARI SINCE 1920
The quality that never varies

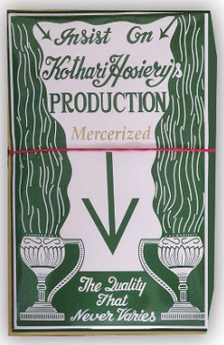

Kothari Mercerized | KOTHARI® FREEDOM | KOTHARI® Uber

Challenge | HIMAWOOLY® | Sweety Pie® for Kids

यो है आपणों राजस्थान

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में आयोजित ३०-३१ मार्च गोरेगांव फिल्म सिटी में आयोजित भव्य कार्यक्रम में 'मेहंदी' प्रतियोगिता के विजेता

प्रथम विजेता
नम्रता शर्मा

द्वितीय विजेता
दर्शना जैन

मुंबई माय राजस्थान स्थापना दिवस ३०-३१ मार्च २०२४

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में आयोजित ३०-३१ मार्च गोरेगांव फिल्म सिटी में आयोजित भव्य कार्यक्रम में 'चित्रकला' प्रतियोगिता के विजेता

प्रथम विजेता
प्रिशा तोषनीवाल

द्वितीय विजेता
निविशा निवेटिया

महाराष्ट्र राज्य की स्थापना १ मई १९६०

महाराष्ट्र राज्य का संक्षिप्त परिचय

राजधानी : मुम्बई, जिले : ३५, भाषा : मराठी, हिंदी, अंग्रेजी

महाराष्ट्र भारत के सबसे अधिक औद्योगिक राज्यों में से एक है, यह देश के पश्चिमी और मध्य भाग में स्थित है, यहाँ विस्तृत सह्याद्री पहाड़ी है। अरब सागर तट पर ७२० किलोमीटर की एक सुंदर पृष्ठभूमि वाले महाराष्ट्र में एक विशाल आकर्षण है। महाराष्ट्र की स्थापना १ मई १९६० को हुई थी।

महाराष्ट्र का भूगोल - आंध्र प्रदेश के उत्तरी और मध्य प्रदेश के पश्चिमी छोर पर बसा महाराष्ट्र अरब सागर से घिरा है, इस क्षेत्र की अनूठी विशेषता मुकुट पठार की एक श्रृंखला है। अरब सागर और सह्याद्री रेंज के बीच कोंकण सिर्फ ५० कि.मी. चौड़ा और २०० मीटर नीचे ऊँचाई के साथ संकीर्ण तटीय तराई है। तीसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र है उत्तरी सीमा पर सतपुडा पहाड़ियां और भामरागढ़-चिरौली-गायखुरी पर्वतमाला।

महाराष्ट्र का संक्षिप्त इतिहास - अहमदनगर जिले में महाराष्ट्र की प्राचीन सभ्यता के कई सबूत मिलते हैं। ६४०-६४१ (ईसा पूर्व) में इस क्षेत्र का दौरा करने वाले चीनी यात्री ह्यूंत्सांग ने इस क्षेत्र की समृद्धि की काफी सराहना की थी। तीसरी और चौथी शताब्दी (ईसा पूर्व) के दौरान कोंकण के क्षेत्र में व्यापार स्थापित था, बौद्ध के समय में काफी प्रगति हुई फिर मौर्य शासन हुआ। महाराष्ट्र की संस्कृति और कला का एक बड़ा केंद्र था राष्ट्रकूट। मौर्य शासन के विघटन के बाद कालक्रमानुसार मुस्लिम शासन मतबूत हुआ। महाराष्ट्र में मुगल शासन के मुंहतोड़ ज़वाब में सक्रिय रहे छत्रपति शिवाजी। शिवाजी मराठवाड़ा के पहले महान शासक थे, उन्होंने महाराष्ट्र स्वतंत्रता, स्वाभिमान व विकास के मार्ग प्रशस्त किये। शिवाजी की वीरता और महानता अभी भी इस प्रदेश के लोगों द्वारा याद की जाती है।

महाराष्ट्र सरकार - वर्तमान में एकनाथ शिंदे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री हैं।

महाराष्ट्र विशेष - कई मायनों में महाराष्ट्र की संस्कृति भी अपने स्थानीय भोजन में परिलक्षित होती है। ज्यादातर लोग महाराष्ट्रीय व्यंजनों से बहुत परिचित नहीं हैं। एक बड़े और रोचक पाक प्रदर्शनी की सूची यहाँ मौजूद हैं। महाराष्ट्रीय भोजन में कोंकणी और वराडी दोनों प्रचलित है। नारियल तेल व्यापक रुप से खाना पकाने के लिए उपयोग में लाया जाता है। मूंगफली तेल का उपयोग मुख्यरुप से खाना पकाने के उपयोग में किया जाता है। कोकम का एक मनभावन मीठा और खट्टा स्वाद होता है। एक गहरे बैंगनी बेर का इसमें इस्तेमाल होता है। क्षुधावर्धक-पाचक के रुप में कोकम का इस्तेमाल होता है। ठंडा परोसा जाता है। समुद्री भोजन के अलावा, सबसे लोकप्रिय मछली बोंबिल है। सभी मांसाहारी और शाकाहारी व्यंजन उबले हुए चावल या चावल के आटे से बनी मुलायम रोटियों (भाकरी) के साथ खाया जाता है। विशेष चावल-पूरी, एक उड़द की दाल और सूजी से बनी पैनकेक भी मुख्य भोजन के रुप में खाया जाता है। शाकाहारी में सबसे लोकप्रिय सब्जी बैंगन है। महाराष्ट्रीयन ज्यादा भूना हुआ या तला हुआ खाना पसंद करते हैं। बड़ा, इडली, सांभर भी महाराष्ट्रीयन काफी पसंद करते हैं, उनका आहार पापड़ के बिना अधूरा है। यहाँ मछुआरों के समाज को 'कोली' कहा जाता है। मछलियों का व्यवसाय ही उनकी आजीविका है। महाराष्ट्र में मजबूत ब्राह्मण प्रभाव भी है, यहाँ संस्कृत शिक्षा के केंद्र भी हैं।

नव बौद्ध विचारों के अनुयायी भी यहाँ काफी संख्या में हैं और वे आंबेडकर वादी हैं। महाराष्ट्र में सबसे प्रसिद्ध हस्तशिल्प के लिए कोल्हापुरी चप्पल और पैठानी साड़ियाँ है। महाराष्ट्र अच्छी तरह से अपने समृद्ध संगीत और नृत्य के लिए भी विश्व भर में जाना जाता है। राज्य में लोक संगीत का खास चलन है। महाराष्ट्रीयन समाज संगीत के क्षेत्र में भी प्रतिनिधित्व और योगदान करते हैं। राज्य के मध्ययुगीन काल में संगीत रत्नाकर के रुप में भारतीय संगीत के सबसे बड़े ग्रंथ के लेखक थे शारंग देव। लता मंगेशकर, पंडित जसराज, भीमसेन जोशी जैसे भारतीय संगीतकारों के अलावा किशोरी अमोनकर भी महाराष्ट्र के गौरवस्तंभ हैं। महाराष्ट्र में थिएटर की परंपरा आज भी है।

महाराष्ट्र के त्योहार - भारत के मुख्य त्योहारों के अलावा महाराष्ट्र गणेश चतुर्थी और गुडी पाड़वा खास तौर पर बड़ी धूमधाम से मनाता है। दुर्गा पूजा के समय में दस दिन की पूजा होती है, बहुत ज्यादा उत्साह के साथ यह पर्व मनाया जाता है। महाराष्ट्र के नए साल की शुरुआत के रुप में 'गुडी पाडवा' काफी महत्वपूर्ण है।

महाराष्ट्र की पोशाक - महाराष्ट्र की महिलाओं की साड़ी उत्तर भारत में पहनी जानेवाली साड़ी से काफी अलग है, जो 'नवारी' के नाम से जानी जाती है, जो नौ गज की होती है। साड़ी, झुमके, भारी हार और चूड़ियों को काफी पसंद किया जाता है। छोटी लड़कियां पार्कर-पोल्का पहनती है, एक पार्कर लंबा परिधान स्कर्ट की तरह है और पोल्का हरे, लाल या नीले रंग का होता है जो पारंपरिक महाराष्ट्रीयन कपड़े से बना एक ठेठ ब्लाउज है। कुर्ते के साथ धोती आम पुरुषों के वस्त्र हैं। पुरुषों द्वारा हाल ही में सामरा नामक एक पारंपरिक शर्ट पहनी गयी थी, यहाँ सिर पर पगड़ी भी पहनते हैं। शहरी केंद्रों में ज्यादातर पुरुष पैंट और कमीज की तरह आधुनिक कपड़े पहनते हैं और औरतें विशेष सामाजिक-त्योहारी अवसरों पर पारंपरिक वस्त्रों के अलावा आधुनिक कपड़े भी पहना करती हैं।

महाराष्ट्र के जिले - महाराष्ट्र राज्य छः डिवीजनों में विभक्त है, जो ३६ जिलों से बना है।

१) अमरावती क्षेत्र: अकोला, अमरावती, बुलढाना, वाशिम और यवतमाल

२) औरंगाबाद क्षेत्र (मराठवाड़ा) : औरंगाबाद, बीड, हिंगोली, जालना, लातूर, नांदेड़, उस्मानाबाद और परभणी

३) कोंकण क्षेत्र : मुम्बई शहर, मुम्बई उपनगरीय, पालघर, रायगढ़, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग और ठाणे

४) नासिक क्षेत्र : अहमदनगर, धुले, जलगांव, नंदुरबार और नासिक

५) नागपुर क्षेत्र : भंडारा, चंद्रपुर, गढ़चिरौली, गोंदिया, नागपुर और वर्धा

६) पुणे क्षेत्र : कोल्हापुर, पुणे, सांगली, सतारा और शोलापुर।

महाराष्ट्र में अर्थव्यवस्था - महाराष्ट्र भारत की अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख स्थान रखता है। भारत की इस वाणिज्यिक राजधानी मुम्बई में देश के सभी प्रमुख औद्योगिक/कॉर्पोरेट घरानों की उपस्थिति है। महाराष्ट्र तिलहन के अलावा मूँगफली, सूरजमुखी, सोयाबीन आदि के साथ कपास, गन्ना, हल्दी और सब्जी जैसी फसलें पैदा करता है। बागवानी-खेती का भी यहाँ विशाल क्षेत्र है।

100% Veg.

NAKODA

NOURISH

nakodagheetel

FRESHLY PRESSED

COLD PRESSED OILS

- Minimal Heating
- No Chemicals
- Manual Filtration
- 100% Natural

From the house of

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

BOOK YOUR ORDER NOW

8928882457 / 8591562269 / 8928586181 / 9137756585

www.nakodagheetel.com info@gheetel.com

FORTIFIED SAMPOORNA POSHAN SWASTH JEEVAN

MAKE IN INDIA

fssai Lic. No: 10017022005931

DAR KOSHER

APEDA

An ISO 22000: 2018 & HACCP Certified Company

राजस्थान का सपूत महाराणा प्रताप

(जन्म- ९ मई, निधन- २९ जनवरी)

महाराणा प्रताप का नाम भारतीय इतिहास में वीरता और दृढ़ प्रतिज्ञा के लिए अमर है, वे उदयपुर, मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा थे। वह तिथि धन्य है, जब मेवाड़ की शौर्य-भूमि पर मेवाड़-मुकुट मणि राणा प्रताप का जन्म हुआ, वे अकेले ऐसे वीर थे, जिन्होंने मुगल बादशाह अकबर की अधीनता किसी भी प्रकार स्वीकार नहीं की। वे हिन्दू कुल के गौरव को सुरक्षित रखने में सदा तल्लीन रहे। महाराणा प्रताप की जयंती विक्रमी सम्वत कॅलेण्डर के अनुसार प्रतिवर्ष ज्येष्ठ, शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाई जाती है।

राजस्थान के कुम्भलगढ़ में प्रताप का जन्म महाराणा उदयसिंह एवं माता राणी जीवत कंवर के घर हुआ था। बप्पा रावल के कुल की अक्षुण्ण कीर्ति की उज्ज्वल पताका, राजपूतों की आन एवं शौर्य का यह पुण्य प्रतीक, राणा सांगा का वह पावन पौत्र (विक्रम संवत १६२८ फाल्गुन शुक्ल १५) तारीख १

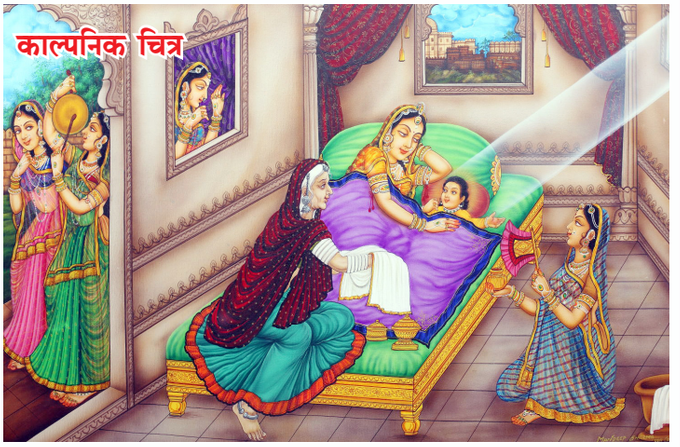

मार्च सन १५७३ ई. को सिंहासनासीन हुआ। शौर्य की मूर्ति प्रताप एकाकी थे। अपनी प्रजा के साथ और एकाकी ही उन्होंने जो धर्म एवं स्वाधीनता के लिये ज्योतिर्मय बलिदान किया, वह विश्व में सदा परतन्त्रता और अधर्म के विरूद्ध संग्राम करनेवाले, मानधनी, गौरवशील मानवों के लिये मशाल सिद्ध हुआ।

धर्म रहेगा और पृथ्वी भी रहेगी पर मुगल साम्राज्य एक दिन नष्ट हो जाएगा, अत: हे राणा! विश्वम्भर भगवान के भरोसे अपने निश्चय को अटल रखना।

अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना के अनुसार महाराणा का यह निश्चय लोकविश्रुत है- भगवान एकलिंग की शपथ है, प्रताप के श्री मुख से अकबर तुर्क ही कहलायेगा, मेरा शरीर रहते उसकी अधीनता स्वीकार कर उसे बादशाह नहीं कहूंगा। सूर्य जहां उगता है, वहां पूर्व में ही उगेगा। सूर्य के पश्चिम में उगने के समान प्रताप के मुख से अकबर को बादशाह कहना असम्भव है।

सम्राट अकबर की कूटनीति व्यापक थी, राज्य को जिस प्रकार उन्होंने राजपूत नरेशों से सन्धि एवं वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा निर्णय एवं विस्तृत कर लिया था, हिंदुत्व और उसकी उज्ज्वल ध्वजा, गर्वपूर्वक उठानेवाला एक ही अमर सेनानी था-प्रताप। अकबर का शक्ति सागर इस अरावली के शिखर से टकराता रहा, पर प्रताप नहीं झुके।

अकबर के महासेनापति राजा मानसिंह, शोलापुर विजय करके लौट रहे थे। उदय सागर पर महाराणा ने उनके स्वागत का प्रबन्ध किया। हिन्दू नरेश के यहां भला अतिथि का सत्कार न होता, किंतु महाराणा प्रताप ऐसे राजपूत के साथ बैठकर भोजन कैसे कर सकते थे, जिसकी बुआ मुगल अन्त:पुर में हो। मानसिंह को बात समझने में कठिनाई नहीं हुई। अपमान से जले वे दिल्ली पहुंचे, उसने सैन्य सज्जित कर चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया।

राजपूताने की पावन बलिदान-भूमि के समकक्ष, विश्व में इतना पवित्र बलिदान स्थल कोई नहीं, उस शौर्य एवं तेज की भव्य गाथा से इतिहास के पृष्ठ रंगे हैं। भीलों का अपने देश और नरेश के लिये वह अमर बलिदान राजपूत वीरों की वह तेजस्विता और महाराणा का वह लोकोत्तर पराक्रम इतिहास का, वीरकाव्य का परम उपजीव्य है। मेवाड़ के उष्ण रक्त ने श्रावण संवत १६३३ विक्रमी श्रम किया कि अन्त में वह सदा के लिये अपने स्वामी **शेष पृष्ठ १३ पर...**

पृष्ठ १२ से... के चरणों में गिर पड़ा।

हल्दीघाटी के प्रवेश द्वार पर अपने चुने गए सैनिकों के साथ प्रताप शत्रु की

प्रतीक्षा करने लगे। दोनों ओर की सेनाओं का सामना होते ही भीषण रूप से युद्ध शुरू हो गया और दोनों तरफ के शूरवीर योद्धा घायल होकर जमीन पर गिरने लगे। प्रताप अपने घोड़े पर सवार होकर द्रुतगति से शत्रु की सेना के भीतर पहुंच गये और राजपुतों के शत्रु मानसिंह को खोजने लगे, वह तो नहीं मिला, परन्तु प्रताप उस जगह पर पहुंच गये, जहां पर सलीम (जहांगीर) अपने हाथी पर बैठा हुआ था। प्रताप की तलवार से सलीम के कई अंगरक्षक मारे गए, यदि प्रताप के भाले और सलीम के बीच में लोहे की मोटी चादर वाला हौदा नहीं होता तो अकबर अपने उत्तराधिकारी से हाथ धो बैठता। प्रताप के घोड़े चेतक ने अपने स्वामी की इच्छा को भांपकर पूरा प्रयास किया और तमाम ऐतिहासिक चित्रों में सलीम के हाथी के सूंड पर चेतक का एक उठा हुआ पैर और प्रताप के भाले द्वारा महावत की छाती का छलनी होना, अंकित किया गया है, महावत के मारे जाने पर घायल हाथी सलीम सहित युद्ध भूमि से भाग खड़ा हुआ।

युद्ध अत्यन्त भयानक हो उठा था। सलीम पर प्रताप के आक्रमण को देखकर असंख्य मुगल सैनिक उसी तरफ बढ़े और प्रताप को घेरकर चारों तरफ से प्रहार करने लगे। प्रताप के सिर पर मेवाड़ का राजमुकुट लगा हुआ था, इसलिए मुगल सैनिक उसी को निशाना बनाकर वार कर रहे थे। राजपूत सैनिक भी उसे बचाने के लिए प्राण हथेली पर रखकर संघर्ष कर रहे थे, परन्तु धीरे-धीरे प्रताप संकट में फंसते जा रहे थे। स्थिति की गम्भीरता को परखकर झाला सरदार ने स्वामिभक्ति का एक अपूर्व आदर्श प्रस्तुत करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। झाला सरदार मन्नाजी तेजी के साथ आगे बढ़ा और प्रताप के सिर से मुकुट उतारकर अपने सिर पर रख लिया और तेजी के साथ कुछ दूरी पर जाकर घमासान युद्ध करने लगा। मुगल सैनिक उसे ही प्रताप समझकर उस पर टूट पड़े और प्रताप को युद्ध भूमि से दूर निकल जाने का अवसर मिल गया, उसका सारा शरीर अगणित घावों से लहुलूहान हो चुका था। युद्धभूमि से जाते-जाते प्रताप ने मन्नाजी को मरते देखा। राजपूतों ने बहादुरी के साथ मुगलों का मुकाबला किया, परन्तु मैदानी तोपों तथा बन्दूकधारियों से सुसज्जित शत्रु की विशाल सेना के सामने समूचा पराक्रम निष्फल रहा। युद्धभूमि पर उपस्थित बाईस हजार राजपूत सैनिकों में से केवल आठ हजार जीवित सैनिक युद्धभूमि से किसी प्रकार बचकर निकल पाये। महाराणा प्रताप चित्तौड़ छोड़कर वनवासी हो गए। महाराणी, सुकुमार राजकुमारी और कुमार घास की रोटियों और निर्झर के जल पर ही किसी प्रकार जीवन व्यतीत करने को बाध्य हुए। अरावली की गुफाएं ही अब उनका आवास थीं और शिला ही शैय्या थी। दिल्ली का सम्राट सादर सेनापतित्व देने को प्रस्तुत था, वह केवल यह चाहता था कि प्रताप मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ले और उसका दम्भ सफल हो जाये। महाराणा प्रताप का पुत्र और उत्तराधिकारी अमर सिंह, अपने पिता की भांति उसने भी स्वतंत्रता के लिए अकबर से युद्ध किया पर १५९९ ई. में पराजित हो गया, लेकिन उसने संघर्ष जारी रखा और १६१४ ई. तक मुगल सेनाओं से लोहा लेता रहा, इस बीच अकबर की मृत्यु हो चुकी थी और जहांगीर शासक बन गया था। जहांगीर ने मेवाड़ के राणा के मुगल दरबार में उपस्थित होने और किसी राजकुमारी को मुगल हरम में भेजने की अपमानजनक शर्त नहीं रखी थी, अत: अपनी असफलता को देखते हुए अमर सिंह ने उसके साथ संधि कर ली, यह संधि औरंगजेब के सत्ता में आने के समय तक चलती रही।

हिंदुत्व पर दीन-ए-इलाही स्वयं विजयी हो जाता है। **शेष पृष्ठ १४ पर...**

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की सफलता पर हार्दिक शुभकामनाएं

Jagmohan Bagla
Mob: 9339040400
Adarsh Bagla Avinash Bagla

PSP SINCE 1965
PRAKASH STEEL PRODUCTS PVT. LTD.
MANUFACTURERS & DEALERS OF HOT ROLLED STEEL BARS
& COLD ROLLED / BRIGHT STEEL BARS
Bagla House, 1 Baishnob Charan Seth Street,
Near Jorabagan Park, Kolkata,
West Bengal, Bharat-700006 033-46041219
bagla@prakashsteel.com www.prakashsteel.com

पृष्ठ १३ से... प्रताप राजपूत की आन का वह सम्राट हिंदुत्व का वह गौरव-सूर्य संकट, त्याग, तप में अम्लान रहा, अडिग रहा। धर्म के लिये, आन के

लिये यह तपस्या अकल्पित है। कहते हैं महाराणा ने अकबर को एक बार सन्धि-पत्र भेजा था, पर इतिहासकार इसे सत्य नहीं मानते, यह अबुल फजल की मात्र एक गढ़ी हुई कहानी भर है। अकल्पित सहायता मेवाड़ के गौरव भामाशाह ने महाराणा के चरणों में अपनी समस्त सम्पत्ति रख दी। महाराणा इस प्रचुर सम्पत्ति से पुन: सैन्य-संगठन में लग गये। चित्तौड़ को छोड़ महाराणा ने अपने समस्त दुर्गों का शत्रु से उद्धार कर लिया। उदयपुर उनकी राजधानी बनी, अपने २४ वर्षों के शासन काल में प्रताप ने मेवाड़ की केसरिया पताका सदा ऊंची रखी।

दिल्ली का उत्तराधिकारी युवराज सलीम (बाद में जहांगीर) मुगल सेना के साथ युद्ध के लिए चढ़ आया, उसके साथ राजा मानसिंह और सागरजी का जातिभ्रष्ट पुत्र मोहबत खां भी था। प्रताप ने अपने पर्वतों और बाईस हजार राजपूतों में विश्वास रखते हुए अकबर के पुत्र का सामना किया। अरावली के पश्चिम छोर तक शाही सेना को किसी प्रकार के विरोध का सामना नहीं करना पड़ा, क्योंकि इसके आगे का मार्ग प्रताप के नियंत्रण में था।

प्रताप अपनी नई राजधानी के पश्चिम की ओर पहाड़ियों में आ डटे, इस इलाके की लम्बाई लगभग ८० मील (लगभग १२८ कि.मी.) थी और इतनी ही चौड़ाई थी। सारा इलाका पर्वतों और बनों से घिरा हुआ था। बीच-बीच में कई छोटी-छोटी नदियां बहती थीं। राजधानी की तरफ जानेवाले मार्ग इतने तंग और दुर्गम थे कि बड़ी कठिनाई से दो गाड़ियां आ जा सकती थी, उस स्थान का नाम हल्दीघाटी था, जिसके द्वार पर खेड़े पर्वत को लांघकर उसमें प्रवेश करना संकट को मोल लेना था, उनके साथ विश्वासी भील लोग भी धनुष और बाण लेकर हट गए। भीलों के पास बड़े-बड़े पत्थरों के ढेर पड़े थे, जैसे ही शत्रु सामने से आयेगा, वैसे ही पत्थरों

को लुढ़काकर उसके सिर को तोड़ने की योजना थी।

महाराणा प्रताप प्रजा के हृदय पर शासन करनेवाले एक योद्धा थे। एक आज्ञा हुई और विजयी सेना ने देखा उसकी विजय व्यर्थ है। चित्तौड़ भस्म हो गया, खेत उजड़ गये, कुएँ भर दिये गये और ग्राम के लोक जंगल एवं पर्वतों में अपने समस्त पशु एवं सामग्री के साथ अदृश्य हो गये। शत्रु के लिये इतना विकट उत्तर, यह उस समय महाराणा की अपनी सूझ थी। अकबर के खेमे में राष्ट्रीयता का स्वप्न देखनेवालों को इतिहासकार बदायुँनी आसफ खाँ के ये शब्द स्मरण कर लेने चाहिए-

किसी की ओर से सैनिक क्यों न मरे, थे वे हिन्दू ही और प्रत्येक स्थिति में विजय इस्लाम की ही थी, यह कूटनीति थी अकबर की और महाराणा इसके समक्ष अपना राष्ट्रगौरव लेकर अडिग भाव से डटे थे।

मुगल काल में जब राजपूताना के अन्य शासकों ने मुगलों से संधि कर ली, तब मेवाड़ की भूमि पर जिस सूर्य का उदय हुआ, उसका नाम था प्रताप। माता से मेवाड़ी परंपरा और शौर्य की गाथा सुनकर प्रताप का मन बचपन से ही मातृभूमि की भक्ति में लग गया और उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र, कुल और धर्म की रक्षा के लिए अर्पित कर दिया। अकबर से पराजित होने और जंगलों में भटकने के बाद भी उनका साहस नहीं टूटा, महाराणा ने चित्तौड़गढ़ वापस प्राप्त किया और राजपूतों की शान फिर से बढ़ाई।

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की सफलता पर
हार्दिक शुभकामनाएं

BRIJRATAN DAMANI
Mob: 9821068976
73, Shridhar Smruti, Devidas Ext. Road,
Opp. Devki Nagar Jain Temple, Borivali West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 103
Ph. : 022 - 2890 7020

राजस्थानी संस्कृति का महानतम पर्व अक्षय तृतीया

आधिकारिक नाम	-	अक्षय तृतीया
अन्य नाम	-	आखा तीज
अनुयायी	-	हिन्दू, भारतीय, भारतीय प्रवासी
उद्देश्य	-	धर्म, पुण्य, धन और कर्म आदि अक्षय फल
तिथि	-	वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि
उत्सव	-	व्रत, दान, पूजन
समान पर्व	-	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, दशहरा और दीपावली पूर्व प्रदोष तिथि

अक्षय तृतीया या आखा तीज वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को कहते हैं। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन जो भी शुभ कार्य किये जाते हैं, उनका अक्षय फल मिलता है, इसी कारण इसे अक्षय तृतीया कहा जाता है। वैसे तो सभी बारह महीनों की शुक्ल पक्षीय तृतीया शुभ होती है,

किंतु वैशाख माह की तिथि स्वयंसिद्ध मुहूर्तो में मानी गई है। भविष्य पुराण के अनुसार इस तिथि की युगादि तिथियों में गणना **शेष पृष्ठ १६ पर...**

पृष्ठ १५ से... होती है, सतयुग और त्रेता युग का प्रारंभ इसी तिथि से हुआ। भगवान विष्णु ने नर-नारायण, हयग्रीव और परशुराम जी का अवतरण भी इसी तिथि को हुआ था। ब्रह्माजी के पुत्र अक्षय कुमार का आविर्भाव भी

इसी दिन हुआ था, इस दिन श्री बद्रीनाथ जी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की जाती है और श्री लक्ष्मी नारायण के दर्शन किए जाते हैं। प्रसिद्ध तीर्थ स्थल बद्रीनारायण के कपाट भी इसी तिथि से ही पुन: खुलते हैं। वृंदावन स्थित श्री बांके बिहारी जी मन्दिर में भी केवल इसी दिन श्री विग्रह के चरण दर्शन होते हैं, अन्यथा वे पूरे वर्ष वस्त्रों से ढके रहते हैं। जी.एम. हिंगे के अनुसार तृतीया ४१ घटी २१ पल होती है तथा धर्म सिंधु एवं निर्णय सिंधु ग्रंथ के अनुसार अक्षय तृतीया ६ घटी से अधिक होनी चाहिए। पद्म पुराण के अनुसार इस तृतीया को अपराह्न व्यापिनी मानना चाहिए, इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था, द्वापर युग का समापन भी इसी दिन हुआ था। ऐसी मान्यता है कि इस दिन से प्रारम्भ किए गए कार्य अथवा इस दिन को किए गए दान का कभी भी क्षय नहीं होता। मदनरत्न के अनुसार:

अस्यां तिथौ क्षयमुर्पति हुतं न दत्तं
तेनाक्षयेति कथिता मुनिभिस्तृतीया
उद्दिष्य दैवतपितृन्क्रियते मनुष्यै:
तत् च अक्षयं भवति भारत सर्वमेव

महत्व

'अक्षय तृतीया' का सर्वसिद्ध मुहूर्त के रूप में भी विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस दिन बिना कोई पंचांग देखे कोई भी शुभ व मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह-प्रवेश, वस्त्र-आभूषणों की खरीददारी या घर, भूखंड, वाहन आदि की खरीददारी से संबंधित कार्य किए जा सकते हैं। नवीन वस्त्र, आभूषण आदि धारण करने और नई संस्था, समाज आदि की स्थापना या उदघाटन का कार्य श्रेष्ठ माना जाता है। पुराणों में लिखा है कि इस दिन 'पितृ पक्ष' 'पितरों' को किया गया तर्पण तथा पिन्डदान अथवा किसी और प्रकार का दान, अक्षय फल प्रदान करता है, इस दिन गंगा स्नान करने से तथा भगवत पूजन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, यहाँ तक कि इस दिन किया गया जप, तप, हवन, स्वाध्याय और दान भी अक्षय हो जाता है, यह तिथि यदि सोमवार तथा रोहिणी नक्षत्र के दिन आए तो इस दिन किए गए दान, जप-तप का फल बहुत अधिक बढ जाता हैं, इसके अतिरिक्त यदि यह तृतीया मध्याह्न से पहले शुरू होकर प्रदोष काल तक रहे तो बहुत ही श्रेष्ठ मानी जाती है, यह भी माना जाता है कि आज के दिन मनुष्य अपने या स्वजनों द्वारा किए गए जाने-अनजाने अपराधों की सच्चे मन से ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करे तो भगवान उसके अपराधों को क्षमा कर देते हैं और उसे सद्गुण प्रदान करते हैं, अत: आज के दिन अपने दुर्गुणों को भगवान के चरणों में सदा के लिए अर्पित कर उनसे सद्गुणों का वरदान माँगने की परंपरा भी है। **शेष पृष्ठ १७ पर...**

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की सफलता पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Balkrishna Maheshwari
Mob: 9330835423
Mangalam Billding Front Block Flat - 3/33,
Raza Santosh Road, Alipore Kolkata, West Bengal, Bharat-700027
Ph: (033) 24795412/9759

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए 'आपणों राजस्थान'
कार्यक्रम की सफलता पर हार्दिक शुभकामनाएं
Lalit Jain
9869006551
उम्मेद ज्वेलर्स
Gold & Silver Jewellers
Apointed Valuer By Government Of India
Bureau Of Indian Standards Hallmarked Jewellery
Manufacturer, Exporters, Wholesalers Retailer Of :
All Kind Of Gold Jewellery Silver Utensiles, Coins., Lagdi
Jitu Jain : 098211 55 798 e-mail : utzaverisons@gmail.com
UTZ & SONS U.T. Zaveri & Sons
Exclusive Gold, Diamond & Solitaire Jewellery
36, Dagina Bazar, Mumbadevi Road,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400002 Ph: 022-22413336/7
अणुडाक:umedjewellers@rediffmail.com अंतरताना:www.umedjewellers.com

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की सफलता पर
हार्दिक शुभकामनाएं

SHIV NATH NEOTIA & ANJU NEOTIA

6/1/3, Queens Park, Kolkata, West Bengal, Bharat 700 019

पृष्ठ १६ से... **धार्मिक परंपराएँ**

अक्षय तृतीया के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर समुद्र या गंगा स्नान करने के बाद भगवान विष्णु की शांत चित्त होकर विधि विधान से पूजा करने का प्रावधान है।

गंगा स्नान

नैवेद्य में जौ या गेहूँ का सत्तू, ककड़ी और चने की दाल अर्पित की जाती है, तत्पश्चात फल, फूल, बरतन तथा वस्त्र आदि दान करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती है।

ब्राह्मण को भोजन करवाना कल्याणकारी समझा जाता है। मान्यता है कि इस दिन सत्तू अवश्य खाना चाहिए तथा नए वस्त्र और आभूषण पहनने चाहिए। गौ, भूमि, स्वर्ण पात्र इत्यादि का दान भी इस दिन किया जाता है, यह तिथि वसंत ऋतु के अंत और ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ का दिन भी है इसलिए अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे घड़े, कुल्हड़, सकोरे, पंखे, खड़ाऊँ, छाता, चावल, नमक, घी, खरबूजा, ककड़ी, चीनी, साग, इमली, सत्तू आदि गरमी में लाभकारी वस्तुओं का दान पुण्यकारी माना गया है, इस दान के पीछे यह लोक विश्वास है कि इस दिन जिन-जिन वस्तुओं का दान किया जाएगा, वे समस्त वस्तुएँ स्वर्ग या अगले जन्म में प्राप्त होगी, इस दिन लक्ष्मी नारायण जी की पूजा सफेद कमल अथवा सफेद गुलाब या पीले गुलाब से करना चाहिये।

सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि प्रशस्तानि सदार्चने
दानकाले च सर्वत्र मंत्र मेत मुदीरयेत्

अर्थात सभी महीनों की तृतीया में सफेद पुष्प से किया गया पूजन प्रशंसनीय माना गया है। ऐसी भी मान्यता है कि अक्षय तृतीया पर अपने अच्छे आचरण और सद्गुणों से दूसरों का आशीर्वाद लेना अक्षय रहता है, भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा विशेष फलदायी मानी गई है, इस दिन किया गया आचरण और सत्कर्म अक्षय रहता है।

भारतीय संस्कृति में:

इस दिन से शादी-ब्याह करने की शुरुआत हो जाती **शेष पृष्ठ १८ पर...**

अक्षय तृतीया के दिन विवाह सूत्र में बंधे, बिना पंचांग देखे

पृष्ठ १७ से... है, बड़े-बुजुर्ग अपने पुत्र-पुत्रियों के लगन का मांगलिक कार्य आरंभ कर देते हैं, अनेक स्थानों पर छोटे बच्चे भी पूरी रीति-रिवाज के साथ अपने गुड्डा-गुडिया का विवाह रचाते हैं, इस प्रकार गाँवों में बच्चे सामाजिक कार्य व्यवहारों को स्वयं सीखते व आत्मसात करते हैं। कई जगह तो परिवार के साथ-साथ पूरा का पूरा गाँव भी बच्चों के द्वारा रचे गए वैवाहिक कार्यक्रमों में सम्मिलित हो जाता है, इसलिए कहा जा सकता है कि 'अक्षय तृतीया' सामाजिक व सांस्कृतिक शिक्षा का अनूठा त्यौहार है। कृषक समुदाय में इस दिन एकत्रित होकर आने वाले वर्ष के आगमन, कृषि पैदावार आदि के शगुन देखते हैं, ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो सगुन कृषकों को मिलते हैं, वे शत-प्रतिशत सत्य होते हैं।

प्रचलित कथाएँ

'अक्षय तृतीया' की अनेक व्रत कथाएँ प्रचलित हैं। ऐसी ही एक कथा के अनुसार प्राचीन काल में एक धर्मदास नामक वैश्य था, उसकी देव और ब्राह्मणों के प्रति काफी श्रद्धा थी, इस व्रत के महात्म्य को सुनने के पश्चात उसने इस पर्व के आने पर गंगा में स्नान करके विधिपूर्वक देवी-देवताओं की पूजा की, व्रत के दिन स्वर्ण, वस्त्र तथा दिव्य वस्तुएँ ब्राह्मणों को दान में दी। अनेक रोगों से ग्रस्त तथा वृद्ध होने के बावजूद भी उसने उपवास करके धर्म-कर्म और दान पुण्य किया, यही वैश्य दूसरे जन्म में कुशावती का राजा बना, कहते हैं कि 'अक्षय तृतीया' के दिन किए गए दान व पूजन के कारण वह बहुत प्रतापी बना, वह इतना धनी और प्रतापी राजा था कि त्रिदेव तक उसके दरबार में 'अक्षय तृतीया' के दिन ब्राह्मण का वेष धारण करके उसके महायज्ञ में शामिल होते थे। अपनी श्रद्धा और भक्ति का उसे कभी घमंड नहीं हुआ और महान वैभवशाली होने के बावजूद भी वह धर्म मार्ग से विचलित नहीं हुआ। माना जाता है कि यही राजा आगे चलकर राजा चंद्रगुप्त के रूप में पैदा हुआ।

स्कंद पुराण और भविष्य पुराण में उल्लेख है कि वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को रेणुका के गर्भ से भगवान विष्णु ने परशुराम के रूप में जन्म लिया। कोंकण और चिपलून के परशुराम मंदिरों में इस तिथि को परशुराम जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। दक्षिण भारत में 'परशुराम जयंती' को विशेष महत्व दिया जाता है। 'परशुराम जयंती' होने के कारण इस तिथि में भगवान परशुराम के आविर्भाव की कथा भी सुनी जाती है, इस दिन परशुराम जी की पूजा करके उन्हें अर्घ्य देने का बड़ा माहात्म्य माना गया है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ और क्वारी कन्याएँ इस दिन गौरी-पूजा करके मिठाई, फल और भीगे हुए चने बाँटती हैं, गौरी-पार्वती की पूजा करके धातु या मिट्टी के कलश में जल, फल, फूल, तिल, अन्न आदि लेकर दान करती हैं। मान्यता है कि इसी दिन जन्म से ब्राह्मण और कर्म से क्षत्रिय भृगुवंशी परशुराम का जन्म हुआ था। एक कथा के अनुसार परशुराम की माता और विश्वामित्र की माता के पूजन के बाद प्रसाद देते समय ऋषि ने प्रसाद बदल कर दे दिया था, जिसके प्रभाव से परशुराम ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रिय स्वभाव के थे और क्षत्रिय पुत्र होने के बाद भी विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाए। उल्लेख है कि सीता स्वयंवर के समय परशुराम जी अपना धनुष बाण श्री राम को समर्पित कर, संन्यासी का जीवन बिताने अन्यत्र चले गए, अपने साथ एक फरसा रखते थे तभी उनका नाम परशुराम पड़ा।

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की सफलता पर हार्दिक शुभकामनाएं

श्री गौरी शंकर राठी को राजस्थानी एसोसिएशन,
तमिलनाडु द्वारा उनको पेशा और समाज सेवा हेतु
''राजस्थान श्री'' अलंकरण से सम्मानित होने पर
हार्दिक शुभकामनाएँ एवं उज्जवल भविष्य की मंगलकामनाएँ!

:: शुभकामनाओं सहित ::

* तमिलनाडु केरल पुडुचेरी प्रादेशिक माहेश्वरी सभा
* श्री माहेश्वरी सभा, चेन्नई
* मद्रास माहेश्वरी चैरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई
* श्री माहेश्वरी महिला मंडल, चेन्नई
* श्री माहेश्वरी स्पोर्ट्स क्लब, चेन्नई
* श्री माहेश्वरी सत्संग समिति, चेन्नई
* श्री माहेश्वरी क्लब, चेन्नई
* श्री माहेश्वरी युवा मंडल चेन्नई

श्री भक्तमाल कथा - प्रेमपुरी आश्रम

मुंबई: सुप्रसिद्ध सामाजिक व सांस्कृतिक संस्था 'परोपकार' द्वारा श्री भक्तमाल कथा परम पूज्य स्वामी श्रीमद् जगद्गुरु द्वाराचार्य मलूक पीठाधिश्वर राजेन्द्रदास देवाचार्य जी महाराज के कृपा पात्र शिष्य श्री अनंतआनंद दास जी महाराज (मलूक पीठ आश्रम के मुख्य पुजारी) के मुखारविंद से कथा सत्र के द्वितीय दिवस में भगवान श्री कृष्ण की अनन्य भक्त ठाकुर जी के हृदय कमल में निवास करने वाली श्री मीराबाई जी के भक्तिमय चरित्र पर कथा का रसास्वादन मुंबई वासियों को १९ अप्रैल से २१ अप्रैल २०२४ तक स्वामी श्री प्रेमपुरी आश्रम में प्राप्त हुआ, इस अलौकिक दिव्य भक्तिमय कथा को सुनने का सौभाग्य ठाकुर जी की करुणा कृपा से प्राप्त हुआ, साथ ही साथ संत नामदेव और संत ज्ञान देव की भक्तिमय जीवन की महिमा भी बताई गई, साथ में छत्रपति शिवाजी महाराज के गुरु श्री रामदास स्वामी की कथा का सुंदर वर्णन किया गया।

भक्त के बिना भगवान् का अस्तित्व कैसा? भक्त की भक्ति रूपी साधना ही भगवान् को प्रतिष्ठित करती है, चारों युगों के भक्तों की श्रृंखला माला ही भक्तमाल है, श्रीभक्तमाल ग्रन्थ के रचयिता श्री नाभादास जी महाराज हैं। भक्तमाल कथा में भगवान् के प्रति भक्तों का समर्पण और उनकी दिव्य भक्ति का दर्शन है।

ग्रन्थ की यह विशेषता यह है कि इसमें सभी संप्रदयाचार्यों एवं सभी सम्प्रदायों के संतों का समान भाव से श्रद्धापूर्वक संस्मरण किया गया है, इसमें चारों युगों के भक्तों का वर्णन है, ध्रुव, प्रहलाद, द्वादश प्रधान भक्त सूर, कबीर, तुलसी, मीरा, ताजदेवी आदि अनेकों भक्तों की माला ही भक्तमाल है, भगवान् की कथा भक्त सुनते हैं, तो भक्तों की कथा स्वयं भगवान् सुनते हैं।

आयोजित कथा में काफी संख्या में भक्त उपस्थित थे, जिसमें प्रमुख रूप से संस्था अध्यक्ष शंकर केजरीवाल, ट्रस्टी कैलाश अग्रवाल, रामकिशोर दरक, श्रीमती सुलोचना शोरेवाला, आनंद शोरेवाला, श्रीमती मंगला मोदी, विजय लोहिया, नरेश बंसल एवं संस्था के अन्य पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण उपस्थित थे। यह सर्वोत्तम कथा बहुत ही दुर्लभ हैं, मुंबई वासियों का सौभाग्य रहा कि ऐसी भक्तिमयी कथा सुनने को मिली, कथा मधुर भजनों के साथ संगीतमय थी।

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की सफलता पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Devendra Prasad Jajodia B.E. (HONS)
Mob: 09331860001
Jai Balaji Group
5, Bentinck Street, Kolkatta, West Bengal, Bharat-700001
Ph: 033-22489808 Fax : 91 033- 22430021
Email: dpjajodia@jaibalajigroup.com, chandisteel@jaibalajigroup.com
Email: Fact.: csi@jaibalajigroup.com Website: www. jaibalajigroup.com

अक्षय तृतीया के उपलक्ष्य में - तीर्थंकर आदिनाथ पर विशेष

आदिमं पृथिवी - नाथमादिमं निष्परिग्रहम् ।
आदिमं तीर्थ-नाथं च, ऋषभ-स्वामिनं स्तुमः ।।

तीर्थंकर आदिनाथ जैन धर्म के पहले तीर्थंकर थे, उन्होंने अपना जीवन धर्म के प्रचार में लगाया, वे समस्त कलाओं के ज्ञाता और सरस्वती के स्वामी थे। ऋषभनाथ ने हजारों वर्षों तक सुखपूर्वक राज्य किया, फिर राज्य को अपने पुत्रों में विभाजित कर दिगम्बर तपस्वी बन गए, उनके साथ सैकड़ों लोगों ने भी उनका अनुसरण किया। तीर्थंकर आदिनाथ को इस युग के निर्माता के रूप में जाना जाता है, इनसे पहले मनुष्य कोई काम नहीं करते थे अर्थात पढ़ना-लिखना, खेती, व्यापार इत्यादि किसी भी चीज़ का प्रावधान नहीं था। जैन मान्यता के अनुसार उस समय तक मनुष्य की सभी आवश्यकताएं कल्पवृक्ष से पूरी हो जाया करती थी, लेकिन धीरे-धीरे कल्पवृक्ष की शक्तियां कम होती गयी, जब कभी वे भिक्षा मांगने जाते, लोग उन्हें सोना, चांदी, हीरे, रत्न, आभूषण आदि देते थे, लेकिन भोजन कोई नहीं देता था, अत: आदिनाथ को एक वर्ष तक भूखे रहना पड़ा।

श्री ऋषभदेव को एक वर्ष इस प्रकार आहार की अन्तराय का कारण उनका पूर्व भव में किया गया कर्म था, जिसमें किसी खेत में धान्य के ढेर में से बैल धान खा रहे थे और किसान उन्हें मार रहे थे, तब उन्होंने किसानों से कहा की बैल के मुँह पर छींका बाँध दो, जिससे वह धान नहीं खा पाएंगे। किसानों ने कहा कि हमें छींका बांधना नहीं आता, तब आदिनाथ ने स्वयं ही उनके मुँह पर छींका बाँध दिया, वही अन्तराय कर्म का उपार्जन ऋषभदेव को हुआ, उन्हें एक वर्ष से भी ज़्यादा काल बिना आहार-पानी के निकालना पड़ा।

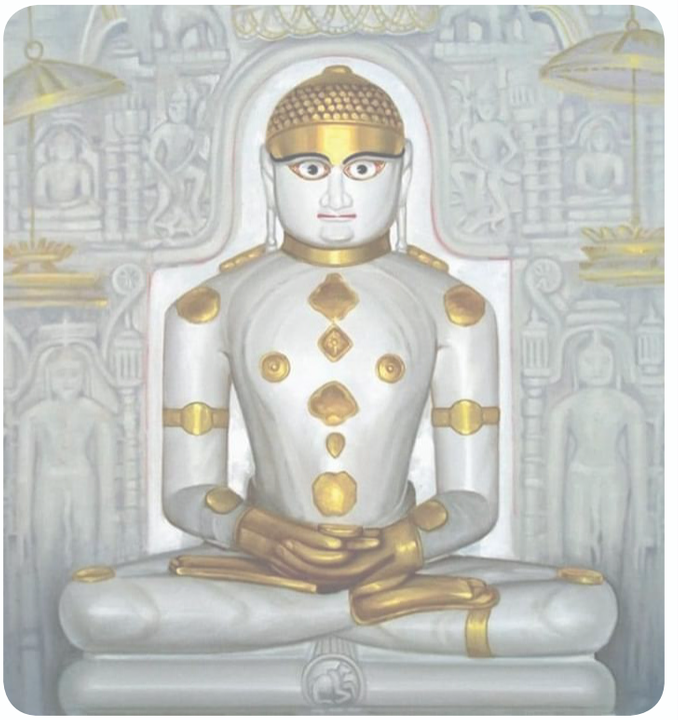

श्री ऋषभदेव आहार के निमित्त विचरते-विचरते हस्तिनापुर पधारे, वहां सीमयशा राजा का पुत्र श्रेयांस कुमार था, रात्रि में उसने स्वप्न देखा कि मेरुपर्वत श्याम हो गया है, उसे अमृत कलश से सींच कर मैंने उज्जवल कर दिया है, उसी रात्रि सुबुद्धि नामक नगर सेठ को भी स्वप्न आया कि सूर्यमण्डल में से हज़ारों किरणें निकल कर बाहर गिर गयी और श्रेयांस कुमार ने उन्हें वापिस स्थापित कर दिया, तभी उस रात्रि को सोमयशा राजा को भी स्वप्न में श्रेयांस कुमार की वजह से अपनी जोत दिखाई थी, सुबह जब सबने अपने स्वप्न बताये कि आज श्रेयांस कुमार को कोई विशेष लाभ होने वाला है तभी ऋषभदेव को विचरते हुए श्रेयांस कुमार ने झरोखे से देखा और उन्हें जातिस्मरण ज्ञान हुआ तथा परमात्मा के साथ बिताये नौ भव देखे, तभी तीर्थंकर ऋषभदेव की तीन प्रदक्षिणा देकर श्रेयांस ने १०८ इक्षुरस के घड़े से प्रासुक आहार ऋषभदेव जी को वोहराया। देवताओं ने अहो दानं-अहो दानं की उद्घोषणा की। श्रेयांस कुमार ने प्रासुक आहार बोहरा कर निरुपम सुख का आनंद लिया।

यह दान श्रेयांस कुमार के लिए अक्षय सुख का कारण बना, इसलिए इस दिन का नाम 'अक्षय तृतीया' प्रसिद्ध हुआ।

अक्षय तृतीया के दिन भव्य जीवों द्वारा सुपात्र दान दिया जाना चाहिए, शील का पालन करना चाहिए। तपस्या की भावना भानी चाहिए, ऐसे सर्वज्ञाता तीर्थंकर आदिनाथ को 'मेरा राजस्थान' परिवार का शत् शत् नमन!

-कोमल कुमार जैन
चेयरमैन - ड्यूक फैशंस (इंडिया) लिमिटेड, लुधियाना
एफ.सी.पी. जीतो

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की सफलता पर हार्दिक शुभकामनाएं

Prof. Dr. Rajendra M. Saraogi
MD, FCPS, FICOG, DGO

Dr. Mohit R. Saraogi
MD, DNB, FCPS, MNAMS, ICOG

Dr. (Ms) Rashmi R. Saraogi
MD

Dr. (Ms) Roopa M. Saraogi
MD, DNB, MNAMS

TIMES LEADING ICONS 2019 MUMBAI

Gynaecologist, Laparoscopist & IVF Specialist

Saraogi Maternity & Gen-Hospital
&
Iris IVF Centre (Since 43 Years)

Khetan Apartment, S.V. Road, Malad West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400064
Ph: 9820946689, 022-28804927, 022-28820277

Clinic Address : 101-102, Simplex Khushaangan Commercial,
Opposite Indian Oil Petrol Pump, S. V Road,
Malad West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400064
Mob. : 8108596729 / 9372179410

बाबा गंगाराम सेवा समिति का आर्शीवाद समारोह सम्पन्न

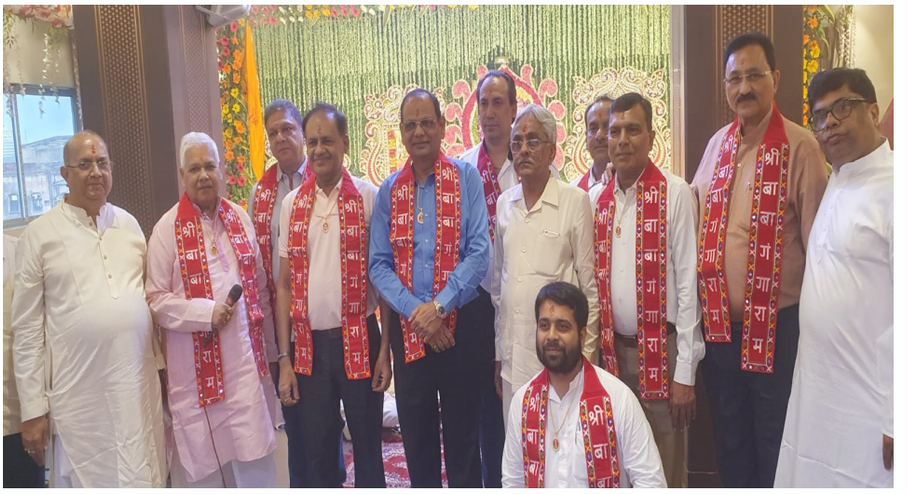

कोलकाता: बाबा गंगाराम सेवा समिति, कोलकाता का आर्शीवाद दिवस महोत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। आर्शीवाद दिवस महोत्सव प्रत्येक वर्ष भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन जी द्वारा उनके महाप्रयाण पर चिता पर भक्तों को दिये गये प्रत्यक्ष चमत्कार एवं आर्शीवाद के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। कार्यक्रम में झुंझुनुवाले विष्णुअवतारी श्री बाबा गंगाराम सहित भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन जी, परम आराधिका माता गायत्री एवं पचंदेवों की मनमोहक झाँकी सजायी गयी थी।

ज्ञात हो कि बाबा गंगाराम का मुख्य धाम झुंझुनूं में श्री पंचदेव मंदिर के नाम से विख्यात है।

कार्यक्रम का शुभारंभ अपराह्न ४ बजे मुकेश सिंघानिया द्वारा ज्योत प्रज्वलन के साथ हुआ, तत्पश्चात हावड़ा के बादामी देवी शिशु संस्थान के जरूरतमंद ४० छात्रों को स्कूल बैग, पठन सामग्री एवं खाद्य पदार्थ वितरण किया गया, उसके पश्चात भजन संध्या का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, जिसके अंतर्गत सुप्रसिद्ध भजन गायक राहुल ग्रेवाल एवं श्रीमती करिश्मा चावला ने अपने मधुर भजनों से उपस्थित भक्तों को भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम में महानगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सुप्रसिद्ध समाजसेवी सज्जन सराफ, रतनलाल अग्रवाल, उमेश राठी, डॉ कैलाश चन्द्र केडिया आदि ने कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की। समिति के संरक्षक विश्वम्बर दयाल घुवालेवाला एवं अध्यक्ष सत्य नारायण सरावगी ने सभी का आभार व्यक्त किया। समिति के सचिव घनश्याम दास खेतान ने 'मेरा राजस्थान' पत्रिका को बताया की कार्यक्रम को सफल बनाने में सुशील मोदी, संदीप मोदी, अरविंद जालान, विजय अग्रवाल, संजय चिरानिया, अनूप मोदी, अमित सुरेका सहित सभी युवा कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की सफलता पर हार्दिक शुभकामनाएं

Babulal Gaggar
Mob: 09435052427

Omprakash Gaggar
Mob: 9820182019

Santosh Gaggar
Mob: 9435093820

A LEADING SHOWROOM WITH ALL KINDS OF

♦Suiting ♦Sarees ♦Readymade Garments
♦Hosieries, Woollens, Blankets ♦Carpets, Furnishing Material ♦Kurl-On-mattresses Pillow, Cushions,
♦Luggages -V.I.P., Samsonite, Aristocrat, Safari ♦Suitings - Raymond, Vimal, OCM

JORHAT FANCY CLOTH STORE

A.T. Road, Jorhat, Assam, Bharat-785001
दूरध्वनि : 0376-2320121 e-mail: babulalgaggar@gmail.com

सैनी युवा प्रतिष्ठान मुंबई द्वारा विवाह परिचय सम्मेलन एवं होली स्नेह समारोह का आयोजन

भायंदरः 'सैनी युवा प्रतिष्ठान' (पंजी.) द्वारा मुंबई के सैनी समाज का यादगार विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय, होली स्नेह-सम्मेलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह भव्यतापूर्वक गत ०७ अप्रैल (रविवार) को भायंदर, मुंबई स्थित शिवार गार्डन में संपन्न हुआ, रंगारंग कार्यक्रम की शुरूआत गणेश-वंदना से हुई। संस्था के पदाधिकारियों के साथ राजस्थान से पधारे हुए भगवनाराम सैनी (विधायक उदयपुरवाटी), शंकरलाल बालाण (जिलाध्यक्ष राजस्थान राज्य सैनी कर्मचारी संस्था, चूरु), भागीरथमल मारोठिया, ब्रिजलाल बालाण (सेवानिवृत्त बिजली बोर्ड), ऑल इंडिया सैनी (माली) सेवा समाज से पधारे राष्ट्रीय संगठन सचिव - पीएम सैनी, प्रदेश अध्यक्ष विजयसिंह राऊत, प्रदेश उपाध्यक्ष मनरूप माली, सैनी युवा प्रतिष्ठान के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य व समाजबंधुओं के द्वारा द्वीप प्रज्वलन संपन्न हुआ।

संस्था ने इस वर्ष विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन करवाया, जिसमें समाज को एक नई दिशा निर्देश मिला, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से पधारे समाज के युवक-युवतियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और समाज के मंच पर अपना परिचय दिया। परिचय सम्मेलन के संयोजक पूर्व उपाध्यक्ष डालमचंद जादम एवं सचिव निवास पंवार ने बखुबी अपनी जिम्मेदारी निभाई जो सराहनीय रही।

समाज के बच्चों द्वारा नृत्य-गायन, महिलाओं द्वारा नृत्य, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं बच्चों-महिलाओं में विशेष खेल प्रतियोगिता, श्रीमती पूनम मोतीलाल बबेरवाल द्वारा संचालित की गयी। कार्यक्रम का संचालन दिनेश्वर माली एवं हेमन्त बालाण के द्वारा किया गया, जो सराहनीय रहा।

मुख्य अतिथि झूमरमल तूनवाल (उद्योगपति एवं समाजसेवी, पुणे), विशेष अतिथि किशोर सतरावला (युवा नेता एवं समाजसेवी, मुंबई), रणवीर कटारिया (केटरर्स एवं समाजसेवी, मुंबई), राजस्थान से विशेष आमंत्रण पर पधारे भगवनाराम सैनी (विधायक उदयपुरवाटी) का सम्मान संस्था के संरक्षक मुरलीमनोहर बालाण, रूपाराम टाक, अध्यक्ष सीए हजारीलाल बालाण, सचिव- निवास पंवार, कोषाध्यक्ष- रामवतार किरोड़ीवाल द्वारा राजस्थानी पगड़ी तथा मोमेन्टो, शॉल, पुष्पगुच्छ के साथ बड़े जोश के साथ स्वागत-सम्मान किया गया।

पारम्परिक स्नेहभाव संस्कृति के अनुसार १५० से ज्यादा समाजबंधुओं को साफा, माला पहनाकर एवं पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया गया।

समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं एवं विशेष डिग्री प्राप्त करने वाले होनहार बच्चों को आकर्षक प्रशस्ति पत्र, अद्भुत सम्मान चिन्ह और मेडल द्वारा सम्मानित किया गया।

मनोरंजन हास्य-व्यंग्य, मिमिक्री एवं मैजिक कार्यक्रम के साथ अंत में महिला-पुरुष सभी द्वारा नृत्य-गायन, लकी ड्रॉ, होली ढफ धमाल का कार्यक्रम सुभाष चुड़ीवाल एवं अरूण सुईवाल टीम द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमें आये हुए सभी समाजबंधुओं ने भरपूर आनंद उठाया।

संस्था के अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष के साथ आये हुए समाजबंधुओं के विचार भी कार्यक्रम में व्यक्त हुए, जिससे उपस्थित समाज बंधु प्रभावित हुए।

कार्यक्रम को शोभनीय और सफल बनाने में संस्था के युवा कार्यकारिणी सदस्यों के साथ-साथ दूर-दूर से सूरत, सिलवासा, बोइसर, वापी, कल्याण, नाशिक, पुणे, शहाड, भिंवडी, ठाणे तथा मुंबई के उपनगरों से सभी आये समाज बंधुओं का स्नेह-सहयोग भी सराहनीय रहा।

६५० से ज्यादा सदस्यों ने अपनी उपस्थिति से इस मंगल समारोह को गौरवान्वित किया, ऐसे कार्यक्रम से सामाजिक सौहार्द, संस्कृति, भाईचारा, रिश्ते-नाते सहित माटी-जन्मभूमि की स्मृति-मर्यादा आदि को बढ़ावा मिलता रहे, यही विश्व चर्चित समस्त ३६ राजस्थानी कौम की एकमात्र पत्रिका 'मेरा राजस्थान' की सद्भावना है। संस्था के अध्यक्ष सीए हज़ारीलाल बालाण ने संगठन की एकता व सभी को साथ चलने संस्था व समाज का विकाश बताया।

सचिव निवास पंवार ने सभी आगंतुक अतिथियों का दिल की गहराइयों से अभिवादन कर सभी का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से संस्था को सेवा व आर्थिक सहयोग किया है, कार्यकारिणी के सभी सदस्यों को उनकी जिम्मेदारियों के प्रति प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम में चूरू नागरिक संघ मुंबई के अध्यक्ष संजय सरावगी, कार्यकारिणी सदस्य किशनलाल मोर, राजेंद्र झिरमिरिया, उमाशंकर ढंढारिया, विपिन बागड़ी भी पधारे जिनका संस्था द्वारा स्वागत किया गया।

समारोह में संस्था के संरक्षक मुरलीमनोहर बालाण, बजरंगसिंह चौहान, रूपाराम टाक, अध्यक्ष सीए हजारीलाल बालाण, सचिव निवास पंवार, कोषाध्यक्ष रामवतार किरोड़ीवाल, उपाध्यक्ष रामलाल तंवर, सह-सचिव सुरेशकुमार राजोरिया, सह-कोषाध्यक्ष रमेश सुईवाल, कार्यकारिणी सदस्य करणीराम दहिया, दिलीप चुनवाल, डालमचंद जादम, पवन बबेरवाल, भंवरलाल सिंगोदिया, पवन सुईवाल, सत्यनारायण गौड़, महेंद्र सैनी, मोतीलाल बबेरवाल, सुभाष सुईवाल, मनमोहन सैनी, छेलाराम किरोड़ीवाल एवं पूरी टीम को संस्था-पदाधिकारियों द्वारा हार्दिक धन्यवाद देते हुए इस भव्य सांस्कृतिक महोत्सव को सफल और स्मरणीय बनानेवाले आये हुए सभी भाइयों-बहनों, मित्रों व बच्चों एवं संस्था के सभी पदाधिकारियों को बहुत बहुत बधाई व शुभकामनाएं देते हुए सबका बहुत-बहुत आभार व्यक्त किया गया। राजस्थानी सज्जन सदैव ऐसे सामाजिक-सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों को सुपरिणाम देने में अग्रणी रहे हैं।

समाज की नारीशक्ति राधा बालाण, ग्यारसी दहिया, कृष्णा सैनी, कुसुमलता चुनवाल, कुसुम बालाण, मंजू किरोड़ीवाल, पूनम बबेरवाल, सीमा पंवार, भंवरी राजोरिया, विद्या बबेरवाल, सुचित्रा सुईवाल, सरोज सैनी, ममता तंवर, अंजू सुईवाल, सूरज कंवर चौहान, शारदा सैनी, लक्ष्मी देवी, रजनी सैनी, सुमन सैनी, मीनू सैनी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम के अंत में राजस्थानी व्यंजन-स्वरुचि भोज का सभी ने भरपूर आनंद उठाया।

भगवान परशुराम

परशुराम त्रेता युग (रामायण काल) के एक ब्राह्मण हैं, उन्हें विष्णु का छठा अवतार भी कहा जाता है, पौराणिक वृत्तान्तों के अनुसार उनका जन्म भृगुश्रेष्ठ महर्षि जमदग्नि द्वारा सम्पन्न पुत्रेष्टि यज्ञ से प्रसन्न देवराज इन्द्र के वरदान स्वरूप पत्नी रेणुका के गर्भ से वैशाख शुक्ल तृतीया को हुआ था, वे भगवान विष्णु के छठे अवतार थे। पितामह भृगु द्वारा सम्पन्न नामकरण संस्कार के अनन्तर राम, जमदग्नि का पुत्र होने के कारण जामदग्न्य और शिवजी द्वारा प्रदत्त परशु धारण किये रहने के कारण वे परशुराम कहलाये। आरम्भिक शिक्षा महर्षि विश्वामित्र एवं ऋचीक के आश्रम में प्राप्त होने के साथ ही महर्षि ऋचीक से सारंग नामक दिव्य वैष्णव धनुष और ब्रह्मर्षि कश्यप से विधिवत अविनाशी वैष्णव मन्त्र प्राप्त हुआ, तदनन्तर कैलाश गिरिश्रृंग पर स्थित भगवान शंकर के आश्रम में विद्या प्राप्त कर विशिष्ट दिव्यास्त्र विद्युदभि नामक परशु प्राप्त किया, शिवजी से उन्हें श्रीकृष्ण का त्रैलोक्य विजय कवच, स्तवराज स्तोत्र एवं मन्त्र कल्पतरु भी प्राप्त हुए, चक्रतीर्थ में किये कठिन तप से प्रसन्न हो भगवान विष्णु ने उन्हें त्रेता में रामावतार होने पर तेजोहरण के उपरान्त कल्पान्त पर्यन्त तपस्यारत भूलोक पर रहने का वर दिया।

वे शस्त्रविद्या के महान गुरु थे, उन्होंने भीष्म, द्रोण व कर्ण को शस्त्रविद्या प्रदान की थी, उन्होंने एकादश छन्दयुक्त 'शिव पंचतत्वारिंशनाम स्तोत्र' भी लिखा, इच्छित फल-प्रदाता परशुराम गायत्री है-

'ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि, तन्नोपरशुराम: प्रचोदयात' वे पुरुषों के लिये आजीवन एक पत्नीव्रत के पक्षधर थे, उन्होंने अत्रि की पत्नी अनसूया, अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा व अपने प्रिय शिष्य अकृतवण के सहयोग से विराट नारी-जागृति-अभियान का संचालन भी किया था, अवशेष कार्यों में कल्कि अवतार होने पर उनका गुरुपद ग्रहण कर उन्हें शस्त्रविद्या प्रदान करना भी बताया गया है।

पौराणिक परिचय : परशुरामजी का उल्लेख रामायण, महाभारत, भागवत पुराण और कल्कि पुराण इत्यादि अनेक ग्रन्थों में किया गया है, वे अहंकारी और धृष्ट हैहय वंशी क्षत्रियों का पृथ्वी से २१ बार संहार करने के लिए प्रसिद्ध हैं, वे धरती पर वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे, कहा जाता है कि भारत के अधिकांश ग्राम उन्हीं के द्वारा बसाये गये, जिसमें कोंकण, गोवा एवं केरल का समावेश है। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान परशुराम ने तीर चला कर गुजरात से लेकर केरल तक समुद्र को पिछे धकेलते हुए नई भूमि का निर्माण किया और इसी कारण कोंकण, गोवा और केरल में भगवान परशुराम वंदनीय हैं और तीर के तेज से उत्पन्न ब्राह्मण को ब्रह्मर्षि ब्राह्मण भी कहते हैं जिसमें बिहार के योद्धा भूमिहार ब्राह्मण, महाराष्ट्र के चित्तपावन, पंजाब के मोहयाल अपनी उत्तपत्ति भगवान परशुराम से मानते हैं, वे भार्गव गोत्र की सबसे आज्ञाकारी सन्तानों में से एक थे, जो सदैव अपने गुरुजनों और माता-पिता की आज्ञा का पालन करते थे, वे सदा बड़ों का सम्मान करते थे और कभी भी उनकी अवहेलना नहीं करते थे, उनका भाव इस जीव सृष्टि को इसके प्राकृतिक सौंदर्य सहित जीवन्त बनाये रखना था, वे चाहते थे कि यह सारी सृष्टि पशु

पक्षियों, वृक्षों, फल-फूल औए समूची प्रकृति के लिए जीवन्त रहे, उनका कहना था कि राजा का धर्म वैदिक जीवन का प्रसार करना है ना कि अपनी प्रजा से आज्ञापालन करवाना, वे एक ब्राह्मण के रूप में जन्में अवश्य थे लेकिन कर्म से एक क्षत्रिय थे, उन्हें भार्गव के नाम से भी जाना जाता है,

यह भी ज्ञात है कि परशुराम ने अधिकांश विद्याएँ अपनी बाल्यावस्था में ही अपनी माता की शिक्षाओं से सीख ली थी (वह शिक्षा जो ८ वर्ष से कम आयु वाले बालकों को दी जाती है) वे पशु-पक्षियों तक की भाषा समझते थे और उनसे बात कर सकते थे, यहाँ तक कि कई खूँखार वनैले पशु भी उनके स्पर्श मात्र से ही उनके मित्र बन जाते थे, उन्होंने सैन्यशिक्षा **शेष पृष्ठ २४ पर...**

पृष्ठ २३ से... केवल ब्राह्मणों को ही दी, लेकिन इसके कुछ अपवाद भी हैं जैसे भीष्म और कर्ण। उनके जाने-माने शिष्य थे - भीष्म द्रोण, कौरव-पाण्डवों के गुरु व अश्वत्थामा के पिता एवं कर्ण।

कर्ण को यह ज्ञात नहीं था कि वह जन्म से क्षत्रिय है, लेकिन उसका सामर्थ्य छुपा न रह सका, उन्होंने परशुराम को यह बात नहीं बताई की वह सूत है और भगवान परशुराम से शिक्षा प्राप्त कर ली, यदि कर्ण उन्हें अपने शुद्र होने की बात बता भी देते तो भी भगवान परशुराम कर्ण के तेज और सामर्थ्य को देख उन्हें सहर्ष शिक्षा देने को तैयार हो जाते, किन्तु जब परशुराम को इसका ज्ञान हुआ तो उन्होंने कर्ण को यह श्राप दिया कि उनका सिखाया हुआ सारा ज्ञान उसके किसी काम नहीं आएगा, जब उसे उसकी सर्वाधिक आवश्यकता होगी, इसलिए जब कुरुक्षेत्र के युद्ध में कर्ण और अर्जुन आमने-सामने होते हैं तब वह अर्जुन द्वारा मार दिया जाता है क्योंकि उस समय कर्ण को ब्रह्मास्त्र चलाने का ज्ञान ध्यान में ही नहीं रहा।

जन्म : प्राचीन काल में कन्नौज में गाधि नाम के एक राजा राज्य करते थे, उनकी सत्यवती नाम की एक अत्यन्त रूपवती कन्या थी। राजा गाधि ने सत्यवती का विवाह भृगुनन्दन ऋषीक के साथ कर दिया। सत्यवती के विवाह के पश्चात् वहाँ भृगु ऋषि ने आकर अपनी पुत्रवधू को आशीर्वाद दिया और उससे वर माँगने के लिये कहा, इस पर सत्यवती ने श्वसुर को प्रसन्न देखकर उनसे अपनी माता के लिये एक पुत्र की याचना की, सत्यवती की याचना पर भृगु ऋषि ने उसे दो चरु पात्र देते हुए कहा कि जब तुम और तुम्हारी माता ऋतु स्नान कर चुकी हो, तब तुम्हारी माँ पुत्र की इच्छा लेकर पीपल का आलिंगन करना और तुम उसी कामना को लेकर गूलर का आलिंगन करना, फिर मेरे द्वारा दिये गये इन चरुओं का सावधानी के साथ अलग-अलग सेवन कर लेना, इधर जब सत्यवती

की माँ ने देखा कि भृगु ने अपने पुत्रवधू को उत्तम सन्तान होने का चरु दिया है तो उसने अपने चरु को अपनी पुत्री के चरु के साथ बदल दिया, इस प्रकार सत्यवती ने अपनी माता वाले चरु का सेवन कर लिया, योगशक्ति से भृगु को इस बात का ज्ञान हो गया और वे अपनी पुत्रवधू के पास आकर बोले कि पुत्री! तुम्हारी माता ने तुम्हारे साथ छल करके तुम्हारे चरु का सेवन कर लिया है, इसलिये अब तुम्हारी सन्तान ब्राह्मण होते हुये भी क्षत्रिय जैसा आचरण करेगी और तुम्हारी माता की सन्तान क्षत्रिय होकर भी ब्राह्मण जैसा आचरण करेगी, इस पर सत्यवती ने भृगु से विनती की, कि आप आशीर्वाद दें कि मेरा पुत्र ब्राह्मण का ही आचरण करे, भले ही मेरा पौत्र क्षत्रिय जैसा आचरण करे। भृगु ने प्रसन्न होकर उसकी विनती स्वीकार कर ली, समय आने पर सत्यवती के गर्भ से जमदग्नि का जन्म हुआ, जमदग्नि अत्यन्त तेजस्वी थे, बड़े होने पर उनका विवाह प्रसेनजित की कन्या रेणुका से हुआ, रेणुका से उनके पाँच पुत्र हुए जिनके नाम थे - रुक्मवान, सुखेण, वसु, विश्वानस और परशुराम।

माता पिता भक्त परशुराम : श्रीमद्भागवत में दृष्टान्त है कि गन्धर्वराज चित्ररथ को अप्सराओं के साथ विहार करता देख हवन हेतु गंगा तट पर जल लेने गई रेणुका आसक्त हो गयी और कुछ देर तक वहीं रुक गयी। हवन काल व्यतीत हो जाने से क्रुद्ध मुनि जमदग्नि ने अपनी पत्नी के आर्य मर्यादा विरोधी आचरण एवं मानसिक व्यभिचार करने के दण्ड स्वरूप सभी पुत्रों को माता रेणुका का वध करने की आज्ञा दी।

अन्य भाइयों द्वारा ऐसा दुस्साहस न कर पाने पर पिता के तपोबल से प्रभावित परशुराम ने उनकी आज्ञानुसार माता का शिरोच्छेद एवं उन्हें बचाने हेतु आगे आये अपने समस्त भाइयों का वध कर डाला, उनके इस कार्य से प्रसन्न जमदग्नि ने जब उनसे वर माँगने का आग्रह किया तो परशुराम ने सभी के पुनर्जीवित होने एवं उनके द्वारा वध किए जाने सम्बन्धी स्मृति नष्ट हो जाने का ही वर माँगा।

पिता जमदग्नि की हत्या और परशुराम का प्रतिशोध : कथानक है कि हैहय वंशाधिपति कार्त्तवीर्य अर्जुन (सहस्त्रार्जुन) ने घोर तप द्वारा भगवान दत्तात्रेय को प्रसन्न कर एक सहस्त्र भुजाएँ तथा युद्ध में किसी से **शेष पृष्ठ २५ पर...**

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की सफलता पर
हार्दिक शुभकामनाएं

HEMANT KAILASH PARASRAMPURIA
Mob: 9820165676
1401, Tower A, Oberai Esquire,
Oberai Garden City, off W E H, Goregaon East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat 400063

30 मार्च राजस्थान स्थापना दिवस
पर मुंबई में हुए
'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम
की सफलता पर
हार्दिक शुभकामनाएं

DINESH KUMAR SEKSARIA
President, SVS Marwadi Hospital

118, Amherst Street, Kolkata, West Bangal, Bharat- 700009
Mob. 9831010587

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ २४ से... परास्त न होने का वर पाया था। संयोगवश वन में आखेट करते वह जमदग्नि मुनि के आश्रम जा पहुँचा और देवराज इन्द्र द्वारा उन्हें प्रदत्त कपिला कामधेनु की सहायता से हुए समस्त सैन्यदल के अद्भुत आतिथ्य सत्कार पर लोभवश जमदग्नि की अवज्ञा करते हुए कामधेनु को बलपूर्वक छीनकर ले गया। कुपित परशुराम ने फरसे के प्रहार से उसकी समस्त भुजाएँ काट डालीं व सिर को धड़ से पृथक कर दिया, तब सहस्त्रार्जुन के पुत्रों ने प्रतिशोध स्वरूप परशुराम की अनुपस्थिति में उनके ध्यानस्थ पिता जमदग्नि की हत्या कर दी। रेणुका पति की चिताग्नि में प्रविष्ट हो सती हो गयीं, इस काण्ड से कुपित परशुराम ने पूरे वेग से महिष्मती नगरी पर आक्रमण कर दिया और उस पर अपना अधिकार कर लिया, इसके बाद उन्होंने एक के बाद एक पूरे इक्कीस बार इस पृथ्वी से क्षत्रियों का विनाश किया, यही नहीं उन्होंने हैहय वंशी क्षत्रियों के रुधिर से स्थलत पंचक क्षेत्र के पाँच सरोवर भर दिये और पिता का श्राद्ध सहस्त्रार्जुन के पुत्रों के रक्त से किया, अन्त में महर्षि ऋचीक ने प्रकट होकर परशुराम को ऐसा घोर कृत्य करने से रोका, इसके पश्चात उन्होंने अश्वमेघ महायज्ञ किया और सप्तद्वीप युक्त पृथ्वी महर्षि कश्यप को दान कर दी, केवल इतना ही नहीं, उन्होंने देवराज इन्द्र के समक्ष अपने शस्त्र त्याग दिये और सागर द्वारा उच्छिष्ट भूभाग महेन्द्र पर्वत पर आश्रम बनाकर रहने लगे।

हैहयवंशी क्षत्रियों का विनाश : माना जाता है कि परशुराम ने २१ बार हैहयवंशी क्षत्रियों को समूल नष्ट किया था। क्षत्रियों का एक वर्ग है जिसे हैहयवंशी समाज कहा जाता है यह समाज आज भी है, इसी समाज में एक राजा हुए थे सहस्त्रार्जुन। परशुराम ने इसी राजा और इनके पुत्र और पौत्रों का वध किया था और उन्हें इसके लिए २१ बार युद्ध करना पड़ा था।

कौन था सहस्त्रार्जुन: सहस्त्रार्जुन एक चन्द्रवंशी राजा था, जिसके पूर्वज थे महिष्मन्त जिन्होंने नर्मदा के किनारे महिष्मती नामक नगर बसाया था, इन्हीं के कुल में आगे चलकर दुर्दुम के उपरान्त कनक के चार पुत्रों में सबसे बड़े कृतवीर्य ने महिष्मती के सिंहासन को सम्हाला। भार्गव वंशी ब्राह्मण इनके राज पुरोहित थे। भार्गव प्रमुख जमदग्नि ऋषि (परशुराम के पिता) से कृतवीर्य के मधुर सम्बन्ध थे, कृतवीर्य के पुत्र का नाम भी अर्जुन था। कृतवीर्य का पुत्र होने के कारण ही उन्हें कार्त्तवीर्यार्जुन भी कहा जाता है। कार्त्तवीर्यार्जुन ने अपनी अराधना से भगवान दत्तात्रेय को प्रसन्न किया था। भगवान दत्तात्रेय ने युद्ध के समय कार्त्तवीर्यार्जुन को हजार हाथों का बल प्राप्त करने का वरदान दिया था, जिसके कारण उन्हें सहस्त्रार्जुन या सहस्त्रबाहु कहा जाने लगा, सहस्त्रार्जुन के पराक्रम से रावण भी घबराता था।

युद्ध का कारण: ऋषि वशिष्ठ से शाप का भाजन बनने के कारण सहस्त्रार्जुन की मति मारी गई थी, सहस्त्रार्जुन ने परशुराम के पिता जमदग्नि के आश्रम में एक कपिला कामधेनु गाय को देखा और उसे पाने की लालसा से वह कामधेनु को बलपूर्वक आश्रम से ले गया, जब परशुराम को यह बात पता चली तो उन्होंने पिता के सम्मान के खातिर कामधेनु वापस लाने की सोची और सहस्त्रार्जुन से उन्होंने युद्ध किया। युद्ध में सहस्त्रार्जुन की सभी भुजाएँ कट गईं और वह मारा गया, तब सहस्त्रार्जुन के पुत्रों ने प्रतिशोधवश परशुराम की अनुपस्थिति में उनके पिता जमदग्नि को मार डाला। परशुराम की माँ रेणुका पति की हत्या से विचलित होकर उनकी चिताग्नि में प्रविष्ट हो सती हो गयी, इस घोर घटना ने परशुराम को क्रोधित कर दिया और उन्होंने संकल्प लिया-

मैं हैहय वंश के सभी क्षत्रियों का नाश करके ही दम लूँगा' उसके बाद उन्होंने अहंकारी और दुष्ट प्रकृति के हैहयवंशी क्षत्रियों से २१ बार युद्ध किया। क्रोधाग्नि में जलते हुए परशुराम ने सर्वप्रथम हैहयवंशियों की **शेष पृष्ठ २६ पर...**

पृष्ठ २५ से... महिष्मती नगरी पर अधिकार किया, तदुपरान्त कार्त्तवीर्यार्जुन का वध। कार्त्तवीर्यार्जुन के दिवंगत होने के बाद उनके पाँच पुत्र जयध्वज, शूरसेन, शूर, वृष और कृष्ण अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते रहे।

दन्तकथाएँ : ब्रह्मवैवर्त पुराण में कथानक मिलता है कि कैलाश स्थित भगवान शंकर के अन्त:पुर में प्रवेश करते समय गणेश जी द्वारा रोके जाने पर परशुराम ने बलपूर्वक अन्दर जाने की चेष्ठा की तब गणपति ने उन्हें स्तम्भित कर अपनी सूँड में लपेटकर समस्त लोकों का भ्रमण कराते हुए गोलोक में भगवान श्रीकृष्ण का दर्शन कराके भूतल पर पटक दिया। चेतनावस्था में आने पर कुपित परशुरामजी द्वारा किए गए फरसे के प्रहार से गणेश जी का एक दाँत टूट गया, जिससे वे एकदन्त कहलाये।

रामायण काल : उन्होंने त्रेतायुग में रामावतार के समय शिवजी का धनुष भंग होने पर आकाश-मार्ग द्वारा मिथिलापुरी पहुँच कर प्रथम तो स्वयं को विश्व-विदित क्षत्रिय कुल द्रोही' बताते हुए 'बहुत भाँति तिन्ह आँख दिखाये' और क्रोधान्ध हो 'सुनहु राम जेहि शिवधनु तोरा, सहसबाहु सम सो रिपु मोरा' तक कह डाला, तदुपरान्त अपनी शक्ति का संशय मिटते ही वैष्णव धनुष श्रीराम को सौंप दिया और क्षमा याचना करते हुए

'अनुचित बहुत कहेउ अज्ञाता, क्षमहु क्षमामन्दिर दोउ भ्राता'

तपस्या के निमित्त वन को लौट गये।

रामचरित मानस की ये पंक्तियाँ साक्षी हैं-

'कह जय जय जय रघुकुलकेतू, भृगुपति गये वनहिं तप हेतू'

वाल्मीकि रामायण में वर्णित कथा के अनुसार दशरथनन्दन श्रीराम ने जमदग्नि कुमार परशुराम का पूजन किया और परशुराम ने रामचन्द्र की परिक्रमा कर आश्रम की ओर प्रस्थान किया।

जाते-जाते भी उन्होंने श्रीराम से उनके भक्तों का सतत सान्निध्य एवं चरणारविन्दों के प्रति सुदृढ भक्ति की ही याचना की थी।

महाभारत काल : भीष्म द्वारा स्वीकार न किये जाने के कारण अंबा प्रतिशोध वश सहायता माँगने के लिये परशुराम के पास आयी, तब सहायता का आश्वासन देते हुए उन्होंने भीष्म को युद्ध के लिये ललकारा, उन दोनों के बीच २३ दिनों तक घमासान युद्ध चला, किन्तु अपने पिता द्वारा इच्छा मृत्यु के वरदान स्वरुप परशुराम उन्हें हरा न सके।

परशुराम अपने जीवन भर की कमाई ब्राह्मणों को दान कर रहे थे, तब द्रोणाचार्य उनके पास पहुँचे, किन्तु दुर्भाग्यवश वे तब तक सब कुछ दान कर चुके थे, तब परशुराम ने दयाभाव से द्रोणाचार्य से कोई भी अस्त्र-शस्त्र चुनने के लिये कहा, तब चतुर द्रोणाचार्य ने कहा कि मैं आपके सभी अस्त्र-शस्त्र उनके मन्त्रों सहित चाहता हूँ ताकि जब भी उनकी आवश्यकता हो, प्रयोग किया जा सके। परशुरामजी ने कहा-'एवमस्तु!' अर्थात् ऐसा ही हो, इससे द्रोणाचार्य शस्त्र विद्या में निपुण हो गये।

परशुराम कर्ण के भी गुरु थे, उन्होंने कर्ण को भी विभिन्न प्रकार की अस्त्र शिक्षा दी थी और ब्रह्मास्त्र चलाना भी सिखाया था, लेकिन कर्ण एक सूत का पुत्र था, फिर भी यह जानते हुए कि परशुराम केवल ब्राह्मणों को ही अपनी विधा दान करते हैं, कर्ण ने छल करके परशुराम से विधा लेने का प्रयास किया।

परशुराम ने उसे ब्राह्मण समझ कर बहुत सी विद्यायें सिखायीं, लेकिन एक दिन जब परशुराम एक वृक्ष के नीचे कर्ण की गोदी में सर रख के सो रहे थे, तब एक भौंरा आकर कर्ण के पैर काटने लगा, अपने गुरुजी की नींद में कोई अवरोध न आये, इसलिये कर्ण भौंरे को सेहता रहा, भौंरा कर्ण के पैर को बुरी तरह काटे जा रहा था, भौंरे के काटने के कारण कर्ण का खून बहने लगा, वो खून बहता हुआ परशुराम के पैरों तक जा पहुँचा। परशुराम की नींद खुल गयी और वे इस खून को तुरन्त पहचान गये कि यह खून तो किसी क्षत्रिय का ही हो सकता है जो इतनी देर तक बगैर उफ़ किये बहता रहा, इस घटना के कारण कर्ण को अपनी अस्त्र विद्या का लाभ नहीं मिल पाया। एक अन्य कथा के अनुसार एक बार गुरु परशुराम कर्ण की एक जंघा पर सिर रखकर सो रहे थे, तभी एक बिच्छू कहीं से आया और कर्ण की जंघा पर घाव बनाने लगा, किन्तु गुरु का विश्राम भंग ना हो, इसलिये कर्ण बिच्छू के दंश को सहता रहा, अचानक परशुराम की निद्रा टूटी और ये जानकर की एक ब्राम्हण पुत्र में इतनी सहनशीलता नहीं हो सकती कि वो बिच्छू के दंश को सहन कर ले। कर्ण के मिथ्याभाषण पर उन्होंने उसे ये श्राप दे दिया कि जब उसे अपनी विद्या की सर्वाधिक आवश्यकता होगी, तब वह उसके काम नहीं आयेगी।

सामाजिक व स्मरणीय कार्यक्रम

किरणदेवी सराफ ट्रस्ट ने नैपकिन वेडिंग मशीनें दान की। लड़कियों के जीवन को सशक्त बनाने के लिए महावीरप्रसाद सराफ ने किरणदेवी सराफ ट्रस्ट के माध्यम से दुर्गादेवी सराफ इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, घनश्यामदास सराफ कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स और देवीप्रसाद गोयनका मैनेजमेंट कॉलेज ऑफ मीडिया स्टडीज को सेनेटरी नैपकिन वेडिंग मशीनें दान की, उद्घाटन महावीरप्रसाद की पोती श्रीमती अर्चिता राजपुरिया ने डॉ. सी डॉ. (सीए) अश्वत देसाई, डॉ. अमी वोरा और कॉलेजों के अन्य कर्मचारियों व बाबू की उपस्थिति में आरएसईटी कॉम्प्लेक्स, मलाड पश्चिम में किया गया।

राजस्थान में 4 पीढ़ी के 70 सदस्यों ने एक साथ डाले वोट

जोधपुर: यह फोटो जोधपुर के बोराणा परिवार की है। परिवार के ७० सदस्य एक साथ मतदान करने पहुंचे, यहां चार पीढ़ियों ने साथ में वोट डाले। इनमें से ५ पहली बार मतदाता स्वरूप अपने मत प्रयोग किया थे, परिवार की महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में पहुंची।

भारत को 'BHARAT' ही बोलेंगे

जय भारत! आपणों राजस्थान

Remove **INDIA** Name From The Constitution

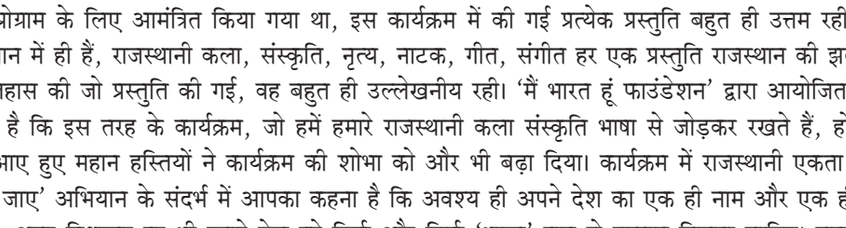

सिद्धि जौहरी

मिसेज इंडिया इंटरनेशनल
जोधपुर निवासी
भ्रमणध्वनि: ७०२३०४३१६४

आज सिद्धि जी किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं, काठमांडू नेपाल में पली-बढ़ी सूर्य नगरी की बहू मिसेज इंडिया इंटरनेशनल, मिसेज गैलेक्सी क्वीन इंडिया, फेस ऑफ़ इंडिया, क्लिनिकल बायोकेमिस्ट नर्सिंग (गोल्ड मेडलिस्ट) के शिक्षा प्राप्त करने वाली सफल उद्यमी, सामाजिक परोपकारी स्वास्थ्य सेवा के राष्ट्रीय ब्रांड एंबेसडर, संयुक्त राष्ट्र और श्री कल्पतरु संस्थान द्वारा इंडो नेपाल ग्रीन मिशन की ब्रांड एंबेसडर, संयुक्त राष्ट्र के तहत विकास लक्ष्यों के तहत महिला सशक्तिकरण की राष्ट्रीय ब्रांड एंबेसडर सिद्धि जोहरी जी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है। श्रीमती सिद्धि जोहरी जी रोल मॉडल और एक युवा अचीवर हैं। अपने सामाजिक कार्य और प्रतिभा के बल पर जीवन में अनेक सफलताएं हासिल की हैं। आप महिला सशक्तिकरण का एक अनूठा उदाहरण होने के साथ-साथ राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया है। 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' द्वारा आयोजित 'राजस्थान दिवस' के उपलक्ष में 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम में आपको राजस्थान कोहिनूर से सम्मानित किया गया, आप एक प्रेरक वक्ता व लेखिका भी हैं। आज तक आपने देश-विदेश में आयोजित ६००० से अधिक कार्यक्रमों में सेलिब्रिटी गेस्ट, गेस्ट ऑफ ऑनर, मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि, जुरी, मोटिवेशनल स्पीकर आदि के रूप में शिरकत कर चुकी हैं।

३० मार्च राजस्थान दिवस के उपलक्ष में 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा आयोजित 'आपणों राजस्थान' के बारे में अपने विचार रखते हुए कहती हैं कि मुझे विशेष कर जोधपुर से इस प्रोग्राम के लिए आमंत्रित किया गया था, इस कार्यक्रम में की गई प्रत्येक प्रस्तुति बहुत ही उत्तम रही, मुंबई में रहते हुए भी ऐसे लग रहा था जैसे हम राजस्थान में ही हैं, राजस्थानी कला, संस्कृति, नृत्य, नाटक, गीत, संगीत हर एक प्रस्तुति राजस्थान की झलक से डूबा हुआ था। नाटक के माध्यम से राजस्थानी इतिहास की जो प्रस्तुति की गई, वह बहुत ही उल्लेखनीय रही। 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' द्वारा आयोजित कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय रहा, मेरा तो यह भी कहना है कि इस तरह के कार्यक्रम, जो हमें हमारे राजस्थानी कला संस्कृति भाषा से जोड़कर रखते हैं, होते ही रहने चाहिए। कार्यक्रम में भारत के अन्य क्षेत्रों से आए हुए महान हस्तियों ने कार्यक्रम की शोभा को और भी बढ़ा दिया। कार्यक्रम में राजस्थानी एकता का प्रतीक महसूस हुआ।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम और एक ही पहचान रहनी चाहिए, नाम का कभी अनुवाद नहीं होता, अतः विश्वस्तर पर भी हमारे देश को सिर्फ और सिर्फ 'भारत' नाम से सम्मान मिलना चाहिए। जय भारत!

विनोद लोढा

पूर्व सचिव हिंदुस्तान चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स
घाणेराव निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३२४६१५७६७

विनोद जी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि राजस्थान और राजस्थानी लोगों की सबसे अच्छी बात यह है कि वह मनुहार में सबसे आगे रहते हैं, अपने घर आने वाले अतिथियों का स्वागत बड़े ही दिल से करते हैं, किसी बात की कोई कमी नहीं रहती। मेरा पूरा बचपन राजस्थान के 'घाणेराव' में ही बीता है, वहां की बहुत सारी मीठी यादें आज भी मेरे दिल में तरोताज़ा है, जिसकी याद आने पर मुख पर मुस्कान आ जाती है। बचपन में बारिश के दिनों में कागज की नाव बनाकर चलाना, वहां का खान पान आज भी याद आता है, इसलिए जब भी समय मिलता है तो मैं राजस्थान अवश्य चला जाता हूं। राजस्थान अपनी कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है, वहां के लोग, वहां का समाज, वहां की हवेलियां, मिठाइयां हर चीज की अपनी विशेषता है। आज राजस्थानी समाज आर्थिक दृष्टिकोण से संपन्न है और भारत के हर क्षेत्र में फैला हुआ है, राजनीतिक क्षेत्र में भी अपनी पकड़ बना रहा है, सब राजस्थानी लोग समृद्ध हैं, हमारे पाली जिले में स्थित हमारा गांव 'घाणेराव' अपनी कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है, वहां ११ विशाल जैन मंदिर बने हुए हैं, नागसिया मंदिर, गौशाला और पशुओं के दो बड़े हाईटेक अस्पताल बने हैं, जो शायद ही राजस्थान में कहीं होंगे, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

आज की युवा पीढ़ी अपनी पढ़ाई और व्यस्तता के कारण अपने पैतृक निवास स्थान पर कम ही जा पाते हैं, जाते भी हैं तो दो-तीन दिन के लिए, मेरा तो यह ही कहना है कि उन्हें यदि अपने राजस्थान से जुड़ना है तो जब भी मौका मिले 'राजस्थान' अवश्य जाना चाहिए।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के पुत्र भरत के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा।

विनोद जी मूलतः राजस्थान के पाली जिले में स्थित 'घाणेराव' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'राजस्थान' में संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने मुंबई से ग्रहण की, माता-पिता के आर्शीवाद से आप कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। हिंदुस्तान चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स के पूर्व सचिव रहे हैं, ओसवाल संघ घाणेराव द्वारा संचालित आदिनाथ भगवान भंडार पेढ़ी के आप सचिव की भूमिका निभा रहे हैं। आपके छोटे भाई नरेश जी भी समाजसेवा में सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

श्रीमती रूपल मोहता
अभिनेत्री व गायिका
खामगांव निवासी
भ्रमणध्वनि: ८२७५२३२३६८

'राजस्थान कोहिनूर' से अलंकृत रूपल जी 'राजस्थान स्थापना दिवस' पर आयोजित 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहती हैं कि ३० मार्च को 'राजस्थान स्थापना दिवस' के अवसर पर 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा आयोजित 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम बहुत ही विशाल रूप में मुंबई में आयोजित किया गया था, जिसमें भारत के हर क्षेत्र से बड़ी-बड़ी हस्तियों ने अपनी सहभागिता दी, कार्यक्रम बहुत ही उत्तम रहा, इस कार्यक्रम का उद्देश्य राजस्थानी कला संस्कृति को बढ़ावा देना क्योंकि संस्कृति आपकी एकता को परिभाषित करती है। कार्यक्रम में भाग लेकर मुझे ऐसा लगा कि मैं वाकई में 'राजस्थान' में हूं, राजस्थान की हर एक चीज को यहां बहुत ही बारिकी से प्रस्तुत किया गया, राजस्थान की कला, संस्कृति, नाटक, गीत, गायन हर चीज की प्रस्तुति बहुत ही उत्तम रही, कार्यक्रम की सराहना जितनी भी की जाए उतना कम ही होगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में मेरा यही कहना है कि यह बिल्कुल सही बात है कि अपने देश का एक ही नाम होना चाहिए, विश्व में हर देश का एक ही नाम है और वह भी उनकी भाषा में होना चाहिए, हमें भी हमारी संस्कृति को बढ़ावा देते हुए अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही कहना चाहिए, जो प्राचीन काल से हमारी पहचान रही है।

बहुआयामी प्रतिभा की धनी रूपल जी मूलत: राजस्थान स्थित 'बीकानेर' की निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'नागपुर' में संपन्न हुई है। विवाह पश्चात महाराष्ट्र की 'खामगांव' (बुलढाणा) में बसी है। आप एक भारतीय मॉडल और मिसेज इंडिया यूनिवर्स २०१९ और दिवा मिसेज इंडिया २०१८ प्रतियोगिता की विजेता हैं। दिवा मिसेज इंडिया २०१८ प्रतियोगिता में महाराष्ट्र राज्य का प्रतिनिधित्व किया और जीता। श्रीमती मोहता दिवा मिसेज इंडिया २०१८ प्रतियोगिता जीतने वाली एकमात्र उम्मीदवार हैं जो 'खामगांव' से महाराष्ट्र के सबसे अंदरूनी हिस्से से आता हैं। आपको कई पत्रिकाओं के कवर के लिए साइन किया गया था, आपको वर्ष २००७ में 'खामगांव आइडल' के रूप में भी सम्मानित किया गया। आपने फिल्मों के साथ अल्बम एवं विज्ञापन में भी भूमिका निभायी है। आपका म्यूजिक वीडियो सुप्रसिद्ध निर्देशक के सी बोकाडीया और राम शंकर जी के हाथों लॉंच किया जा चुका है। आप शिवाय फाउंडेशन की संस्थापक हैं जो अनाथ समुदाय के कल्याण और महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा के लिए काम करती है। श्रीमती मोहता मारवाड़ी युवा मंच मिडटाउन, खामगांव की पूर्व अध्यक्ष रही हैं। वर्ष २०१९ में विदर्भ गौरव पुरस्कार और महाराष्ट्र रत्न पुरस्कार से आपको सन्मानित किया जा चुका है। आप अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के मीडिया प्रबंधन जनसंपर्क समिति सदस्य विवेक जी मोहता की अर्धांगिनी है। आप महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल श्री भगत सिंहजी कोश्यारी द्वारा सम्मानित भी की जा चुकी हैं। जय भारत!

डॉ. श्रद्धा गट्टानी
उद्योगपति व समाजसेवी
उदयपुर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९३१४६६४४१२

डॉ. श्रद्धा जी मुंबई में आयोजित 'राजस्थान स्थापना दिवस' के उपलक्ष में आयोजित 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहती हैं कि 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा आयोजित 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम एक बहुत ही भव्य विशाल रूप में आयोजित कार्यक्रम था, इस कार्यक्रम में बड़ी बड़ी हस्तियों ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति देकर कार्यक्रम की शोभा को और भी बढ़ा दिया। कार्यक्रम का उद्देश्य राजस्थानी कला, संस्कृति को बढ़ावा देना और 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए इंडिया नहीं' यह पूरी तरह से सार्थक हो रहा था। कार्यक्रम में एक से बढ़कर एक राजस्थानी नृत्य, संगीत व गायन की प्रस्तुति की गई, कार्यक्रम की प्लानिंग बहुत ही अच्छी रही।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम और एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', भारत नाम हमारी संस्कृति और इतिहास से जुड़ा हुआ है, हमारी वास्तविक पहचान 'भारत' नाम से ही है।

डॉ. श्रद्धा जी मूलत: राजस्थान के उदयपुर की निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'अजमेर' में संपन्न हुयी। बीए, पीएचडी और एलएलबी की उपाधि आपने विवाह पश्चात उदयपुर से ग्रहण की। यहां हॉस्पिलिटी व वाटर कैन मैन्युफैक्चरिंग, अन्य पारिवारिक कारोबार से जुड़ी हुई हैं, साथ ही आप के.सी. गट्टानी फाउंडेशन, जो आपके परिवार द्वारा स्थापित संस्था है, इस फेडरेशन के माध्यम से 'मुस्कान' जिसमें सीनियर सिटीजन के लिए 'डे केयर' की व्यवस्था की जाती है, वर्तमान में इस संस्था से साढे तीन हजार सीनियर सिटीजन जुड़े हुए हैं, में डायरेक्टर के पद पर सक्रिय हैं। जय भारत!

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका
'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को विश्वनाथ भरतिया परिवार
की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए अब और इंडिया नहीं

सरोज भंसाली
योग शिक्षक व डाइटिशियन
जोधपुर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८१८८९१११४२

सरोज जी 'राजस्थान स्थापना दिवस' के उपलक्ष में आयोजित 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम के बारे में कहती हैं कि यह कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय रहा और 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा यह कार्य निरंतर गति से बढ़ता रहे, यही कामना करती हूं। राजस्थानी कला, संस्कृति, खान पान का पूरा संगम था 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम, कार्यक्रम में आयोजित नृत्य, संगीत व गायन कार्यक्रम की प्रस्तुति उत्तम रही, कार्यक्रम में बड़े-बड़े सामाजिक और उद्योगपतियों ने अपनी उपस्थिति देकर कार्यक्रम की शोभा को और भी बढ़ा दिया, कार्यक्रम का उद्देश्य राजस्थानी कला संस्कृति के साथ 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं, अभियान का उद्देश्य सार्थक होता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं, अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करती हूं। 'भारत' नाम में जो अपनापन और ऐतिहासिकता है, वह इंडिया नाम में कहां? हमारी प्राचीन पहचान 'भारत' नाम से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

सरोज जी मूलतः राजस्थान के 'जोधपुर' की निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'जोधपुर' में ही संपन्न हुई है। पिछले कुछ वर्षों से आप 'मुंबई' में बसी हुई हैं और योग शिक्षक और डाइटिशियन के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही आप 'नारी शक्ति' जोधपुर संगठन जैसी संस्थाओं में भी सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। जय भारत!

श्री सादड़ी राणकपुर मंडल की चित्रकला प्रतियोगिता में नौनिहालों ने दिखाया हुनर

भायंदरः श्री सादड़ी राणकपुर मंडल द्वारा वालचन्द हाइट्स हॉल प्रांगण, भायंदर पश्चिम में रविवार को चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें करीब २०० बच्चों ने भाग लिया। नन्हीं प्रतिभाओं को एक मंच पर लाकर उनकी अंदर छुपी प्रतिभा को समाज के सामने लाने में उद्देश्य से यह आयोजन किया गया था, जो बहुत ही सराहनीय रहा। कार्यक्रम में पुलिस के भरोसा सेल की एपीआई तेजस्विनी शिंदे, प्रकाश तेलिसरा, प्रकाश चंडालिया, राजू भाई तिलकधारी मंगेश कड, कमीर कपाड़िया, रुविका दुग्गल, डॉ. मंगला पाटील, अजित पाटील आदि बतौर अतिथि उपस्थित थे। मंडल अध्यक्ष डॉ. महेंद्र जैन और कमेटी सदस्यों ने अतिथियों का स्मृति चिह्न, पुष्पगुच्छ देकर सम्मान किया। जजेज की भूमिका डॉ. नाजनीन शेख, एकता कोठारी, अविशा शाह, नीलम बाफना, विधि भंडारी, चारु हिंगड़, तसिन शाह, मयंक सर ने निभाई। प्रतियोगिता में अपेक्षा रितेश शाह प्रथम, युग बागरेचा, हृदयांश जैन, निवि

मेहता दूसरे और जयेश नितिन मांगले, धृति तीसरे स्थान पर रहे। सभी प्रतिभागी बच्चों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय कवि संगम प्रांतीय अधिवेशन मारवाड़ी क्लब कटक में सम्पन्न

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक अग्रोहा धाम में सम्पन्न

२३ मई

बुद्ध पूर्णिमा

बौद्ध धर्म में आस्था रखने वालों का एक प्रमुख त्यौहार है, यह बैसाख माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। बुद्ध पूर्णिमा के दिन ही गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था, इसी दिन उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी और इसी दिन उनका महानिर्वाण भी हुआ था। पू. बैसाख मास की पूर्णिमा को बुद्ध का जन्म लुंबिनी, भारत (आज का नेपाल) में हुआ था, पूर्णिमा के दिन ही ४८३ ई. पू. में ८० वर्ष की आयु में, कुशीनगर में उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया, वर्तमान समय में कुशीनगर उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जनपद का एक कस्बा है।

परिचय : भगवान बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति (बुद्धत्व या संबोधि) और महापरिनिर्वाण ये तीनों एक ही दिन अर्थात बैशाख पूर्णिमा के दिन ही हुए थे, ऐसा किसी अन्य महापुरुष के साथ आज तक नहीं हुआ, अपने मानवतावादी एवं विज्ञानवादी बौद्ध धर्म दर्शन से भगवान बुद्ध दुनिया के सबसे महान महापुरुष हुए, इसी दिन भगवान बुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी, आज बौद्ध धर्म को मानने वाले विश्व में १८० करोड़ से अधिक लोग इस दिन को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं, हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए बुद्ध विष्णु के नौवें अवतार हैं, अतः हिन्दुओं के लिए भी यह दिन पवित्र माना जाता है, यह त्यौहार भारत, चीन, नेपाल, सिंगापुर, वियतनाम, थाइलैंड, जापान, कंबोडिया, मलेशिया, श्रीलंका, म्यांमार, इंडोनेशिया, पाकिस्तान तथा विश्व के कई देशों में मनाया जाता है।

बुद्ध के ही बिहार स्थित बोधगया नामक स्थान हिन्दू व बौद्ध धर्मावलंबियों के पवित्र तीर्थ स्थान हैं। गृहत्याग के पश्चात सिद्धार्थ सत्य की खोज के लिए सात वर्षों तक वन में भटकते रहे, यहाँ उन्होंने कठोर तप किया और अंततः वैशाख पूर्णिमा के दिन बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे उन्हें बुद्धत्व ज्ञान की प्राप्ति हुई, तभी से यह दिन बुद्ध पूर्णिमा के रूप में जाना जाता है।

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर में स्थित महापरिनिर्वाण पर एक माह का मेला लगता है।

यद्यपि यह तीर्थ गौतम बुद्ध से संबंधित है, लेकिन आस-पास के क्षेत्र में हिंदू धर्म के लोगों की संख्या ज्यादा है और यहां पूजा-अर्चना करने बड़ी श्रद्धा के साथ लोग आते हैं, इस का महत्व बुद्ध के महापरिनिर्वाण से है, इस मंदिर का स्थापत्य अजंता की गुफाओं से प्रेरित है, यहाँ भगवान बुद्ध की लेटी हुई (भू-स्पर्श मुद्रा) ६.१ मीटर लंबी मूर्ति है, जो लाल बलुई मिट्टी की बनी है। यह उसी स्थान पर बनाया गया है, जहां से यह मूर्ति निकाली गयी थी, इसके विहार के पूर्व हिस्से में एक स्तूप है, यहां पर भगवान बुद्ध का अंतिम संस्कार किया गया था, यह मूर्ति भी अजंता में बनी भगवान बुद्ध की महापरिनिर्वाण मूर्ति की प्रतिकृति है।

श्रीलंका व अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में इस दिन को 'वेसाक' उत्सव के रूप में मनाते हैं जो 'वैशाख' शब्द का अपभ्रंश है।

इस दिन बौद्ध अनुयायी घरों में दीपक जलाए जाते हैं और फूलों से घरों को सजाते हैं, विश्व भर से बौद्ध धर्म के अनुयायी बोध गया आते हैं और प्रार्थनाएँ करते हैं, इस दिन बौद्ध धर्म ग्रंथों का पाठ किया जाता है। घरों में बुद्ध की मूर्ति पर फल-फूल चढ़ाते हैं और दीपक जलाकर पूजा करते हैं। बोधिवृक्ष की भी पूजा की जाती है, उसकी शाखाओं को हार व रंगीन पताकाओं से सजाते हैं। वृक्ष के आसपास दीपक जलाकर इसकी जड़ों में दूध व सुगंधित पानी डाला जाता है, पूर्णिमा के दिन किए गए अच्छे कार्यों से पुण्य की प्राप्ति होती है। पिंजरों से पक्षियों को मुक्त करते हैं व गरीबों को भोजन व वस्त्र दान किए जाते हैं। दिल्ली स्थित बुद्ध संग्रहालय में इस दिन बुद्ध की अस्थियों को बाहर प्रदर्शित किया जाता है, जिससे कि बौद्ध धर्मावलंबी यहाँ आकर प्रार्थना कर सके।

'बुद्ध पूर्णिमा' के दिन जरूर करें ये काम : बैशाख का महीना सबसे पवित्र महीना माना जाता है, इस मास हमें हिन्दू और बौद्ध धर्म के लोगों के लिए कई त्यौहार आते हैं, इस मास में दान-पुण्य करने से आपको समृद्धि की प्राप्ति होती है। बैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। बुद्ध पूर्णिमा के दिन ही गौतम बुद्ध का जन्म हुआ और इसी दिन बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, इसलिए बुद्ध को मानने वाले लोगों के लिए यह महीना सबसे ज्यादा पवित्र माना जाता है।

हिन्दू धर्म में बैशाख पूर्णिमा के दिन दान-पुण्य और धर्म-कर्म के अनेक कार्य किए जाते हैं। श्रद्धालु इस दिन पवित्र नदियों में स्नान कर दान पुण्य का कार्य करते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु ने नौवें रूप में अवतार लिया था, ये अवतार भगवान बुद्ध के रूप में था और इसी दिन भगवान बुद्ध ने मोक्ष प्राप्त किया था, बैशाख पूर्णिमा के दिन धर्मराज गुरु की पूजा की जाती है।

बढ़ते तापमान से पाचन पर भी असर रेशेदार व सुपाच्य आहार को दें प्राथमिकता

गर्मियों में सेहत का ऐसे रखें ध्यान

गर्मी में तापमान बढ़ने से शरीर में पित्त की प्रबलता होता है, शरीर का बल कम होता है, पाचन शक्ति भी घटती है, इसलिये शरीर के बल व पाचन तंत्र के अनुसार आहार-विहार का नियमानुसार पालन करना आवश्यक है,

३ घंटे लगते हैं भोजन को पचने में: भोजन में अंतर नहीं रखने से अपच, कब्ज होती है। ग्रीष्म के अनुसार ग्रीष्मकाल में समस्त प्राणियों का शारीरिक व मानसिक बल घट जाता हैं, वसन्त ऋतु जाने के साथ ही वातावरण तेजी से बदलता है, तेज गर्मी पड़ती है। फाल्गुन और चैत्र मास से वसन्त व ग्रीष्म ऋतु उत्तरायण काल के अन्तर्गत आते हैं, इस दौरान सूरज की किरणें पृथ्वी पर पड़ने लगती है, धूप में तेजी से लू व तापघात का खतरा बढ़ता है।

रेशेदार और रस वाली चीजें ज्यादा लाभकारी: इस ऋतु में दिन लंबे व रातें छोटी होती हैं, सूर्य की तेज किरणें पृथ्वी के स्नेहांश और द्रवांश को अपनी तरफ खींच लेती है, दक्षिण दिशा से वायु बहती है। चारों दिशाओं से कष्टदायी हवाएं चलती हैं, ऐसे में रेशेदार व रसयुक्त चीजों का सेवन स्वास्थ्य के लिए ज्यादा लाभकारी होता है।

जानिए आहार-विहार के सिद्धांत

जो आहार पकने में हल्का हो, मीठा, स्निग्ध (घी व तेल से बने खाद्य पदार्थ) शीतल पदार्थ हो मसलन ताजे भोजन का प्रयोग करना चाहिए, एक साल पुराने चावल,गेहूं की रोटी-दलिया, सत्तू, मूंग दाल, मसूर दाल, गाय के दूध का प्रयोग करना चाहिए।

पथ्य आहार: गाय का दूध-दही, छाछ, श्रीखण्ड, नींबू, चंदन और फाल्से का शर्बत, गन्ने का रस, नारियल पानी, शहद मिश्रित जल, फ्रूट शेक, तरबूज, खरबूजा व जलजीरा का प्रयोग करना चाहिए, ये पथ्य आहार है।

अपथ्य आहार: चाय, काफी, शराब से दूरी रखें। मिर्च-मसालेदार, तैलीय खानपान से बचें, बासी खाना प्रोसेस्ड, डिब्बा बन्द व मांसाहार खाद्य पदार्थ न खाएं, इस तरह के आहार पित्तवर्द्धक होते हैं।

जंकफूड देर से पचता है, पोषक तत्व भी कम मिलते है, मैदा, बेसन युक्त चीजें देर से पचती हैं, स्ट्रीट फूड, जंकफूड, चाट, पिज्जा, बर्गर ना खाएं, इनमें अधिक कैलोरी, ट्रांसफैट के साथ पोषक तत्व बहुत कम मिलते हैं, ये ताकत की बजाय आलस्य व थकान बढ़ाते हैं।

➢**शरीर में बढ़ते हैं विकार:** पित्त व वात दोष बढ़ने से बीमारियां बढ़ती हैं शरीर का बल व पाचन शक्ति कमजोर होती है, पसीना, त्वचा में रूखापन, कमजोरी, भूख-प्यास कम होना, लू, दस्त, हरारत, नकसीर, जलन की समस्या होती है।

➢**दिन में एक प्रहर नींद लें:** पैदल चलें। हल्का व्यायाम व चंदन, नारियल तेल से मालिश कर, ऊर्जा व स्फूर्ति मिलेगी, दिन में एक प्रहर (४५ मिनट) नींद लें। क्षमतानुसार ही परिश्रम करें, प्यासे न रहें,यह दिनचर्या रखेगी स्वस्थ और ऊर्जावान।

➢**सुबह उठना (६से ७ बजे):** नियमित आधा घंटा पैदल चलें, इससे पहले एक गिलास नींबू-पानी या गुनगुना पानी ले सकते हैं।

➢**नाश्ता (८ से ९ बजे):** स्कूल, ऑफिस जाने से पहले पौष्टिक नाश्ता लें। ४-५ भीगे बादाम, अंकुरित अनाज, दलिया के साथ दूध लें।

➢**लंच से पहले (११-११.३० बजे):** कोई एक-दो मौसमी फल लें, भुने हुए चने भी ले सकते हैं, यह विटामिन, मिनरल्स रोग प्रतिरोधकता बढ़ाते हैं।

➢**दोपहर का खाना (१ से २ बजे):** खाने से आधे घंटे पहले सलाद लें, इसके बाद चपाती, दाल, दही, सब्जी लें, तली-भुनी चीजें ना खाएं।

➢**शाम का नाश्ता (४ से ५ बजे):** शाम के समय शर्बत, भुने चने, सैंडविच, भेलपुरी या फाइबर बिस्किट ले सकते हैं।

➢**रात्रि का खाना (७ से ८ बजे):** डिनर सोने से दो से तीन घंटे पहले करें, हल्का व सुपाच्य आहार लें, इससे सुबह उठने पर ताजगी रहेगी।

चॉकलेट थिक शेक

सामग्री- 2 केले, 75 मि.ली. दूध, 75 मि.ली. फ्रेश क्रीम, 50 ग्राम डार्क चॉकलेट, सजावट के लिए पुदीने की पत्तियां।

विधि- डार्क चॉकलेट को 30 सेकेंड तक माइक्रोवेव में रखें।

अच्छी तरह मिलाएं और ठंडा करें, इसमें केले, दूध और फ्रेश क्रीम मिला लें और थोड़ी-सी बर्फ डालकर मिक्सर में ब्लेंड करें। पुदीने की पत्तियों से सजाकर ठंडा करके सर्व करें।

बेल शरबत

सामग्री- 1 किलो पके बेल का गूदा, 2 किलो शक्कर, 1 लीटर पानी, 20 ग्राम सिट्रिक एसिड, आधा टीस्पून खाने वाला हरा रंग, 1/4 टीस्पून पोटैशियम मेटाबाईसल्फाइट (प्रीजर्वेटिव)

विधि- बेल का छिलका उतार लें और गूदे को छान लें। पानी में शक्कर मिलाकर चाशनी तैयार करें, चाशनी में उबाल लें, चाशनी ठंडी हो जाए तब उसमें बेल का गूंदा मिलाएं और मिक्सर में ब्लेंड करें, फिर इसमें खाने वाला हरा रंग और पोटैशियम मेटाबाईसल्फाइट (गरम पानी में घोलकर) डालें, तैयार शरबत को बोतल में भरकर रखें, सर्व करते समय 2-3 टीस्पून शरबत में पानी व बर्फ मिलाकर सर्व करें।

पाइनेप्पल आइस्क्रीम

सामग्री- 1 प्लेन बेस आइस्क्रीम, 200 मिली.फ्रेश क्रीम, 100 ग्राम पपीता 100 ग्राम फ्रेश पाइनेप्पल।

विधि- प्लेन बेस आइस्क्रीम में क्रीम मिलाकर फेंट लें और फ्रीज कर दें। पपीता व पाइनेप्पल को बारीक टुकड़ों में काट लें। अब आइस्क्रीम में कटे हुए पाइनेप्पल और पपीता डालकर अच्छी तरह मिलाएं और प्लास्टिक कंटेनर में डालकर फ्रीज में सेट होने के लिए रख दें।

ठंडा ठंडा-कूल कूल

खीरानंद

सामग्री- 1 लीटर दूध, 50 ग्राम बासमती चावल, 60 ग्राम शक्कर, 2 टेबलस्पून ड्रायफ्रूट्स कटे हुए, चुटकीभर केसर,

विधि- पैन में दूध उबालें, चावल को धोकर दूध में मिलाएं और तब तक पकाएं जब तक कि दूध आधा न रह जाए, शक्कर डालकर 2 मिनट तक और पकाएं। आंच से उतार लें। ड्रायफ्रूटस और केसर से सजाकर सर्व करें।

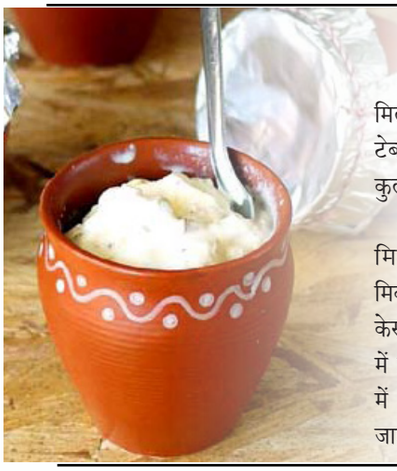

पॉट कुल्फी

सामग्री- 1 डिब्बा कंडेंस्ड मिल्क, 2 कप ताजा क्रीम, 2 टेबलस्पून पिस्ता, 4-6 मिट्टी के कुल्हड़, चुटकीभर केसर।

विधि- एक बर्तन में कंडेस्ड मिल्स और क्रीम डालें, हैंड मिक्सर से मिक्स करें। पिस्ता और केसर डालें, इस मिश्रण को कुल्हड़ में डालें और 4-6 घंटे तक फ्रिज में रख दें, जब अच्छी तरह जम जाए तो सर्व करें।

प्रलाइन एंड चॉकलेट मिल्क शेक

सामग्री- 200 मि.ली. ठंडा दूध, 50 ग्राम ठंडी फ्रेश क्रीम, 30 ग्राम प्रलाइन (मार्केट में उपलब्ध) 20 ग्राम ग्रेटड चॉकलेट, सॉफ्ट चॉक्लेट का आधा टुकड़ा, 1/4 टीस्पून कॉफी, 1 टेबलस्पून शक्कर।

विधि: सभी सामग्री को मिलाकर मिक्सर में ग्राइंड करके ठंडा-ठंडा सर्व करें।

यो है आपणों राजस्थान

मुंबई माय राजस्थान स्थापना दिवस ३०-३१ मार्च २०२४

गेहूं की खिचड़ी

अक्षय तृतीया पर विशेष

आखा तीज जो अक्षय तृतीया के नाम से भी प्रसिद्ध है जैनियों और हिंदुओं के लिए सबसे पवित्र और शुभ दिन है। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार पूरा दिन शुभ होता है और किसी नए उद्यम को शुरू करने के लिए मुहूर्त की जरूरत नहीं होती है और न ही किसी अन्य शुभ कार्य जैसे शादी, ग्रह प्रवेश, नामकरण आदि आदि के लिए, इस दिन दान करना बहुत अच्छा माना जाता है। आखा तीज के शुभ अवसर पर अधिकांश राजस्थानी और हिंदू परिवार 'गेहूं का खिचड़ा' नामक पारंपरिक पकवान बनाते हैं। गेहू का खिचड़ा एक संपूर्ण भोजन है जो स्वस्थ और पौष्टिक होता है, यह प्रोटीन, फाइबर, खनिज, विटामिन और काबोर्हाइड्रेट्स का अच्छा स्रोत है। यह एक विशेष प्रकार की खिचड़ी है और इसका स्वाद बहुत स्वादिष्ट होता है।

गेहु का खिचड़ा बनाने की विधि बहुत ही सरल और आसान है, बस पहले से तैयारी की आवश्यकता होती है क्योंकि गेहूं को कुछ घंटों के लिए भिगोया जाता है और फिर भूसी निकालने के लिए इसे कुचला जाता है।

गेहूं का खिचड़ा के लिए सामग्री- १ चाय कप सबूत गेहूं, १/४ चाय कप साबुत मूंग, १/४ चाय कप चावल, १/८ चम्मच हल्दी, आवश्यकतानुसार नमक, तड़का के लिए सामग्री, २ tbsp देसी घी, ½ छोटा चम्मच जीरा, १/८ चम्मच हींग, २ बारीक कटी हुई हरी मिर्च, ½ छोटा चम्मच कसा हुआ अदरक, १० से १२ कटे हुए काजू, गेंहु के खिचड़े पर ऊपर से डालने के लिए देसी घी

गेहूं का खिचड़ा बनाने की पूर्व तैयारी- एक कटोरे में एक कप गेहूं लें, गेहूं पर चौथाई चाय कप पानी छिड़कें, इसे ठीक से मिलाएं, कटोरे को ढक्कन के साथ कवर करें और इसे ६ से ७ घंटे के लिए एक तरफ रख दें। अब मिक्सर में ३ से ४ सेकंड के लिए गेहूं को चला लें, मिक्सर को बंद कर दें, प्रक्रिया को ४ से ५ बार दोहराएं। एक प्लेट में गेहूं को निकालें और इसे अपने हाथों से रगड़ें। गेहूं को छलनी से छान कर या फटक कर भूसी निकाल दे। अब फिर से गेहूं को एक घंटे के लिए पानी में भिगो दें, साबूत मूंग को ६ से ७ घंटे के लिए भिगो दें। चावल को १० से १५ मिनट के लिए भिगो दें।

बनाने का तरीका – प्रेशर कुकर में ४ चाय कप पानी उबालें, गेहूं, साबुत मूंग और चावल डालें, हल्दी और नमक डाले और ढक्कन बंद करें।

एक सीटी के बाद आंच धीमी कर दें और १० मिनट तक पकाएं।

आंच बंद करें और प्रेशर रिलीज होने दें।

प्रेशर कुकर का ढक्कन खोलें और गेंहू का खिचड़ा मैश करें।

तड़का – २ टेबलस्पून देसी घी को गर्म करें, जीरा डालें, जब यह तडकने लगे तो हरी मिर्च और अदरक डालें और इसे कुछ सेकंड के लिए भूनें, अब काजू डालें और इसे सुनहरा होने तक भूनें, हींग छिड़कें और गेहु के खिचड़े पर तड़का लगाएं।

परोसने का तरीका – गरमा गरम गेंहू के खिचड़े पर परोसते समय ऊपर से देसी घी डालें और इसे अपनी मनपसंद संगत के साथ परोसें।

पधारो म्हारे देश

मेरा राजस्थान

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

दिसंबर 2023

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- **भीनमाल** 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-28509999

सम्पादक

बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट

विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-

आजीवन शुल्क ११,१११/-

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2022-2024
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2022-24
License to post without prepayment'
Published on 28/04/2024 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S
FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

ONLY ₹50/- PER PC

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक विजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in